छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
माह – आश्विन–कार्तिक, संवत् 2076
अक्टूबर 2019

ओ३म्

अंक 168, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाण दिवस एवं
दीपावली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं

महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय, टाटीबन्ध रायपुर में सम्पन्न शिक्षक दिवस समारोह की चित्रमय झलकियाँ

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष - १५, अंक ३ ओ३म् मास/सन् - अक्टूबर २०१९

श्रुतिप्रणीत–सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त–दीप्त वेद–सारभूतनिश्चयं ।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सज्जसज्जकम् ,
सभाग्निदूत–पत्रिकेयमादधातु मानसे ।।

विक्रमी संवत् - २०७६
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,११९
दयानन्दाब्द - १९६

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री चतुर्भुज कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. 8370047335)

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ८९०३१६८४२४

पेज सज्जक :
श्रीनारायण कौशिक

- कार्यालय पता -
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१
फोन : (०७८८) ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;
e-mail . chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क-१००/- दसवर्षीय-८००/-

विषय - सूची

पृष्ठ क्र.

१.	तेरी प्रति प्रणत	स्व. रामनाथ वेदालंकार	०४
२.	सृष्टि का उजाला था "दयानन्द"	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	ऋषि दयानन्द और दीपावली पर्व	मनमोहन कुमार आर्य	०८
४.	निःशुल्क चयन प्रणाली से ही भ्रष्टाचार मिटेगा	रघुराज शास्त्री	११
५.	वार्धक्य अभिशाप नहीं, वरदान है	पंडित राकेश आर्य	१३
६.	ईश्वर की सत्ता है	ओमप्रकाश अग्रवाल	१५
७.	संयोग : एक अनबूझ पहेली	ओमप्रकाश बजाज	१७
८.	जीवन के साथ मृत्यु भी बन गई प्रेरणा	आचार्य भद्रसेन	१८
९.	आर्यवीर दल : उद्देश्य एवं महत्व	डॉ. ज्ञानेन्द्र जिज्ञासु	२०
१०.	महर्षि दयानन्द के प्रेरक प्रसंग	खुशहाल चन्द्र आर्य	२२
११.	क्या रावण का वध विजयादशमी को हुआ था ?	सम्पादक	२५
१२.	दोनों वक्त पेट भरना जरूरी	अनुज गुप्त	२७
१३.	कविता : दयानन्द के बेटे	रोहित आर्य	२९
१४.	पं. श्याम जी कृष्ण वर्मा : जयन्ती	डॉ. भवानीलाल भारतीय	३०
१३.	होमियोपैथी से कब्ज का उपचार	डॉ. विद्याकांत त्रिवेदी	३१
१४.	समाचार प्रवाह		३३

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक - आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

तेरी प्रति प्रणत

वेदामृत

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

अभि त्वा शूर नोनुमो, अदुग्धा इव धेनवः।
ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशम्, ईशानमिन्द्र तस्थुषः॥

ऋषिः मैत्रावरुणिः वसिष्ठः। देवता इन्द्रः। छन्दः बृहती।

● (शूर इन्द्र) हे शूरवीर परमेश्वर! (अस्य) इस (जगतः) जंगम जगत् के (ईशानं) अधीश्वर, (स्वर्दृशं) मुक्ति-सुख का दर्शन कराने वाले (त्वा अभि) तेरे प्रति (नोनुमः) (हम) बारम्बार बहुत-बहुत झुकते हैं, (इव) जैसे (अदुग्धाः) न दुही हुई (धेनवः) गौं (झुक जाती है)।

हे इन्द्र! हे ऐश्वर्यशाली, शूरवीर परमात्मन् !तुम ही इस समस्त जंगम और स्थावर जगत् के ईशान हो, अधीश्वर हो। तुमसे भिन्न कोई अन्य इसका अधीश्वर नहीं हो सकता। आज का मानव बड़े-बड़े वैज्ञानिक आविष्कार करने का दम्भ भरता है, पर आज तक वह अपनी विज्ञानशला में किसी जंगम प्राणी का निर्माण नहीं कर सका, तुम ही हो जो सहस्रों सजीव प्राणियों की तथा उनमें सर्वोपरि माने जाने वाले सजीव मानव की रचना करते है। प्राणियों के जीवित जंगम शरीरों की रचना कैसी आश्चर्यमय है। शरीर में मस्तिष्क, चक्षु आदि इन्द्रियाँ, श्वास-संस्थान, हृदय, रक्त-वाहिनियाँ, भोजन-प्रणाली, आमाशय, आँते, मूत्र संस्थान आदि सभी की रचना अत्यन्त विस्मयकारिणी है। हे परमेश! तुम्हारी इन कारीगरी को देखकर तुम्हारे प्रति मन श्रद्धावनत हो जाता है। और स्थावर जगत् भी क्या कुछ कम विस्मयकारी है। ये हिमाच्छादित गगनचुम्बी पर्वत, ये मुख से आग उगलने वाली ज्वालामुखी, ये कलकल-निनादिनी सरिताएँ, ये रत्नाकर, ये सूर-चाँद-सितारे, ये वन-उपवन, ये अहोरात्र, ऋतुचक्र, संवत्सर, सभी तुम्हारी महिमा को उजागर करते हैं। हे जगत्पति परमेश्वर! जहाँ तुम जंगम-स्थावर के ईशान हो, वहाँ साथ ही 'स्वर्दृश' भी हो, मनुष्य को मुक्ति-सुख का दर्शन कराने वाले भी हो। जीवात्मा को आवागमन के चक्र में घुमाते हुए तुम उसे कर्मानुसार मानव-योनि प्रदान कर मुक्ति के लिए प्रयास का अवसर देते हो। मानव के मन में मुक्त होने को सत्प्रेरणा करते हो, और उसे अपनी शरण में लेकर मुक्ति-सुख प्रदान करते हो। उसे यह सर्वोच्च उपलब्धि कराने वाले एकमात्र तुम्हीं हो। अतः हे इन्द्र! हे महामहिमशाली! हे देवेश! हम तुम्हारे प्रति बारम्बार झुकते हैं, श्रद्धा से प्रणत होते हैं। जैसे जब गायों के ऊधसों में दूध भरा होता है, तब वे झुक जाती है, वैसे ही श्रद्धा-भक्ति से परिपूर्ण हुए हम भी तुम्हारे प्रति प्रणतः हो रहे हैं। हमारी इस प्रणति को, हमारे साष्टांग प्रणाम को, हमारे इस समर्पण को तुम स्वीकार करो।

संस्कृतार्थ :- १. नोनुमः भृशं नताः स्मः। (द भा, ऋग्. ४.३२.४) अतिशयेन पुनः पुनः नुमः, णु स्तुतौ।

सम्पादकीय

सृष्टि का उजाला था-"दयानन्द"

संन्यासी संसारमात्र की सम्पत्ति होता है। वह सारे संसार का होता है और सारा संसार उसका होता है। उसके लिए न कोई हिन्दू है न मुसलमान, न कोई ईसाई न कोई पारसी, न कोई अछूत है, न कोई ब्राह्मण, न कोई अमीर है न कोई गरीब। उसका ज्ञान, कर्म सब प्राणियों के लिए समान रुप से होता है।

ऐसे ही गुणों की साकार मूर्ति, आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती थे, जिनका जन्म आज से १९५ वर्ष पूर्व सौराष्ट्र के अन्तर्गत 'टंकारा' नामक कस्बे में हुआ। कई लोग महर्षि जी को तथा उनके द्वारा स्थापित "आर्यसमाज" को साम्प्रदायिक मानते हैं। ऐसा समझना भारी भूल है। साम्प्रदायिकता के चश्में से दयानन्द को देखने वाले वाकई नासमझ है। महर्षिदयानन्द विश्व-वन्द्य थे। वे विश्व को सामने रखकर कार्य करते थे। उन्होने आर्यसमाज की स्थापना करते समय सार्वभौम दस नियम बनाते हुए छठे नियम में लिखा - "संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।" आगे नवमें नियम में लिखा है - "अपनी ही उन्नति से संतुष्ट नहीं रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।"

राष्ट्र की एकता सुदृढ़ करनी हो, तो उसकी एक भाषा होनी आवश्यक है। वह भाषा ऐसी हो जिसकी प्रायः सारे राष्ट्र के अधिक लोग समझते हों, बोलते हों और लिखते हों। भारत के लिए वह भाषा 'हिन्दी' ही हो सकती है। आज से सवा सौ वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द ने राष्ट्र में एकता लाने के लिए स्वयम् अहिन्दी-भाषी प्रदेश गुजरात के होते हुए हिन्दी में प्रचार ही शुरु नहीं किया बल्कि अपने सत्यार्थ-प्रकाश आदि महान् ग्रन्थ भी हिन्दी में ही लिखे और वेदों के सर्वप्रथम आर्य दृष्टिकोण को सामने रखकर हिन्दी में भाष्य किए। महर्षि जी को इतने से सन्तोष नहीं हुआ। आपने आर्य-समाज की स्थापना करते समय नियमोपनियमों में लिखा - 'हर एक आर्य को संस्कृत के साथ आर्य भाषा हिन्दी अवश्य सीखनी चाहिए।' आर्यसमाजी चाहे वे उत्तर में हो, चाहे पश्चिम में हो, पूर्व में हो, चाहे पश्चिम में हों, देश में हो चाहे विदेश में- उन्हें हिन्दी का पर्याप्त ज्ञान अवश्य होगा। महर्षि ने हिन्दी को आर्यभाषा लिखकर अपने हिन्दी प्रेम का सुन्दरतम् उदाहरण उपस्थित किया है।

वर्तमान में अहिन्दी-क्षेत्रों में राष्ट्रभाषा हिन्दी विरोधी जो आन्दोलन चलाए जा

रहे हैं, उनके पीछे कुछ राजनीतिक नेताओं का स्वार्थ निहित है। कोई भी राष्ट्रवादी व्यक्ति ऐसे आन्दोलनों को पसन्द नहीं करेगा। आन्दोलन के कारण हमें यह नहीं समझना चाहिए कि वहां के लोग हिन्दी-भाषा को नहीं चाहते।

सर्वत्र वस्तुस्थिति यह है कि पहले की अपेक्षा इस समय अहिन्दी-भाषी क्षेत्रों में हिन्दी के परीक्षार्थी की संख्या बहुत अधिक बढ़ चुकी है। चेन्नई में रहने वाले हमारे एक मित्र ने बताया - "यहाँ बीस-पच्चीस छविगृहों में हिन्दी चलचित्र ही सफलतापूर्वक चलते हैं। इससे हम अनुमान लगा सकते हैं कि अहिन्दी-भाषी क्षेत्रों में हिन्दी के प्रति इतनी घृणा नहीं है, जितनी हम उन स्वार्थी नेताओं के चलाए गए आन्दोलनों से अनुमान लगाते हैं। वास्तव में तो हिंन्दी को इतना गौरवशाली पद दिलाने का सौभाग्य अहिन्दी-भाषी क्षेत्र के महर्षि दयानन्द, राजाराममोहन राय, लोकमान्य तिलक, सुभाष बाबू, विनोबा भावे, वीर सावरकर आदि महानुभावों को ही प्राप्त है।

महर्षि दयानन्द गाय की धार्मिक भावना को इतना महत्व नहीं देते थे, जितना कि आर्थिक पक्ष को। आपने अंग्रेज जमाने में, जब भारत पर अंग्रेजों का प्रभुत्व था- गो-रक्षा सम्बन्धी आन्दोलन चलाया और दो करोड़ हस्ताक्षर कराकर अंग्रेज अधिकारियों से गौ-हत्या बन्द कराने की मांग की। आपने अपने आर्थिक दृष्टिकोण को उपस्थित करते हुए कहा - "गाय हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी के लिए परमात्मा द्वारा समानरुप से प्रदान किया हुआ प्राणी है, जो उसकी जितनी सेवा करेगा, उसको वह उतना ही लाभ देगी।" आपने अपनी दलील में आगे कहा - "गाय की हत्या करने से, उसके मांस से ७०-७५ व्यक्ति एक समय भूख मिटा सकेंगे, परन्तु यदि उसे जीवित रखा गया तो वर्षों तक असंख्य लोग उसके अमृतरुपी-घी, दूध, छाछ से लाभ उठा सकेंगे।" आपने इस सम्बन्ध में एक बहुत ही सुन्दर खोजपूर्ण पुस्तक "गो-करुणानिधि" लिखी है। आप सिर्फ गो-हत्या बन्द कराने के लिए आन्दोलन ही नहीं करते थे, किन्तु आपने इस पशुधन की रक्षा के लिए कई स्थानों पर योजनाएँ स्थापित की। आपने सर्वप्रथम गोशाला रिवाड़ी में स्थापित की।

महर्षि जी के युग में अछूतों और नारी-जाति को नीची कोटि का समझा जाता था। उन्हें वेद-शास्त्रों के अध्ययन-अध्यापन का कोई अधिकार नहीं दिया जाता था। आपने इस अन्याय के विरुद्ध आन्दोलन चलाते हुए कहा - "जैसे परमात्मा द्वारा दिये हुए सूर्य के प्रकाश, जलवायु आदि का सबको उपभोग करने का अधिकार है- चाहे वह ब्राह्मण हो, चाहे भंगी, चाहे वह अमीर हो, चाहे गरीब हो, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, इसी प्रकार परमात्मा द्वारा दिया हुआ वेदों का ज्ञान भी सबके लिए समान है।" आपके अनुयायियों में सर्वप्रथम राजऋषि स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने जालंधर में तथा तपोमूर्ति पं. आनन्दप्रिय जी ने आर्यकुमार महासभा के अन्तर्गत बड़ौदा में अछूतोद्धार और नारी-जाति के उद्धार के लिए कार्य किया। आजकल दोनों स्थानों पर बड़े सुन्दर कन्या गुरुकुल तथा महाविद्यालय चलाए जा रहे हैं। इन दोनों शिक्षा केन्द्रों से शिक्षा प्राप्त कन्याएँ भारत की लोकसभा तथा राज्य सभा में उच्च स्थानों पर अपनी सेवाएँ देती रही हैं। अब तो जालंधर में महर्षि का स्मारक, डी.ए.व्ही. विश्वविद्यालय भी बन चुका है। जो अपनी शैक्षणिक गुणवत्ता के लिए देश एवं विदेश में अपना गौरवपूर्ण स्थान रखता है।

महर्षि दयानन्द विश्व में अशान्ति का मूल कारण सम्प्रदायवाद को समझते थे। सम्प्रदायवाद एक ऐसा रोग है जो कभी किसी भी जाति अथवा राष्ट्र को शान्ति से नहीं रहने देता। इसका मुख्य काम है - एक दूसरे सम्प्रदाय एवं राष्ट्र से घृणा पैदा करना। इसका नाश महर्षि ने परमावश्यक समझा। वे जानते थे कि जब तक सम्प्रदायवाद रहेगा, तब तक विश्व में शान्ति कठिन है। आपने अपने विचार रखते हुए कहा - "आज मानव शान्ति चाहता है, परन्तु शान्ति तब

तक नहीं आएगी, जब तक इन्सानों के चलाए हुए मत-सम्प्रदाय इस पृथ्वी पर रहेंगे। कारण, ये मत-सम्प्रदाय एक दूसरे से घृणा करते नजर आ रहे हैं। जो घृणा सिखाता हो, वह धर्म का स्थान नहीं ले सकता।" आपने बताया कि "सृष्टि रचना के पश्चात् परमात्मा ने मानवजाति के ज्ञान के लिए वेदों का ज्ञान दिया है। वेद न सिर्फ हिन्दुओं के लिए है, परन्तु मानवमात्र के लिए परमात्मा द्वारा दिया हुआ ज्ञान है। उसमें न ईर्ष्या है, न घृणा को ही स्थान है। वेद सबकी भलाई चाहता है। वेद ही इस पृथ्वी पर प्राचीन पवित्र ग्रन्थ है। उसकी वाणी न सिर्फ आर्यों के लिए है, परन्तु ईसाईयों और मुसलमानों को भी उस पवित्र ग्रन्थ पर पूरा समानाधिकार है।" आपने कहा- "हमें विश्व में शान्ति लानी हो, तो विश्व भर के लोगों का एक धर्म हो, एक धर्मग्रन्थ हो, एक ईश्वर-पूजा की विधि हो, एक विश्वचक्रवर्ती राज्य हो, उसका एक ही राष्ट्र-ध्वज हो, एक भाषा हो और एक ही मान्यता जब तक नहीं होगी, तब तक विश्व में शान्ति सम्भव नहीं।"

चरित्रहीनता और पाखण्ड के महर्षि जी बहुत विरोधी थे। इसके कारण आपको १७ बार जहर भी दिया गया, विविध प्रकार के कष्ट भी दिए गए, न जाने कैसी कैसी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। कभी पानी में डूबाकर मार डालने का प्रयास किया गया, कभी तलवार से जान लेने की कोशिश की गई। अपमानित करने के तो ऐसे ऐसे हथकण्डे अपनाए कि लिखा नहीं जा सकता। बरेली में एक आदमी मुंह कालाकर गधे पर बैठा पेट पर दयानन्द लिख शोभायात्रा ही निकाल दी गई, पर वाह रे दयानन्द तू विचलित न हुआ। परन्तु आपने सबको दया तथा ब्रह्मचर्य के बल से असफल कर दिया। सत्य एवं न्याय के ऐसे पत्थर थे कि कठोर सत्य बोलने में तनिक नहीं हिचकते थे। अन्तिम दिनों में आप जोधपुर में प्रचारार्थ गए हुए थे। जोधपुर नरेश के आप मेहमान थे। एक दिन आपने एक मुसलमान वेश्या को राजा के महल में पालकी में जाते हुए देख लिया। आपने महाराजा को बुलाकर फटकारते हुए कहा - "जिस प्रजा के राजा ऐसे चरित्रहीन होंगे, उसकी प्रजा का क्या होगा ? कहाँ तू राजपूत शेर, और कहाँ तूने एक कुतिया का संग कर रखा है।" महर्षि जी के इन शब्दों ने महाराजा पर असर किया। वेश्या का महल में आना-जाना बन्द हो गया। उस वेश्या ने चिढ़ कर महर्षि को, उनके जगन्नाथ नाम के रसोईये द्वारा दूध में जहर के साथ बारीक कांच पीस कर दे दिया। जहर एवं कांच ने अपना प्रभाव शरीर पर डालना शुरु किया। नेवली क्रिया से जहर को हज्म करने की कोशिश की, परन्तु कांच अपना काम करने लगा। हालत बिगड़ने लगी। शरीर पर छाले होने लगे।

भक्तों के आग्रह पर आपको माऊंट आबू लाया गया, ताकि ठंडक में जहर का प्रभाव कम हो जाए, परन्तु वहां अंग्रेज सरकार ने इस क्रान्तिकारी संन्यासी को अपने मार्ग में रोड़ा समझकर डाक्टरों द्वारा इसे हटाना चाहा। डाक्टरों ने अंग्रेज अधिकारियों के इशारे पर अपने हाथों की सफाई दिखाई। महर्षि की हालत खतरनाक रुप धारण करने लगी। आप को शिष्यगण अजमेर ले गये। वहां जहर देने के ठीक एक मास पश्चात् दीपावली के दिन सायंकाल जब लोग मिट्टी के दीपकों में तेल डालकर अपने घर-द्वारों पर दीपक जला रहे थे, तब ये महान् ज्योतिर्मय दीपक अपने जीवन रुपी दीपक के, ज्ञान-रुपी प्रकाश द्वारा अंधकार में भटकने वाले मानवों को प्रकाश-पथ बता, "प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो", कहकर सदा के लिए उस अनन्त प्रभु की गोद में चले गए। आईये निर्वाण दिवस अवसर पर ऋषि के अधूरे कार्यों को करने का एक नया संकल्प लेकर आगे आएँ और अपनी क्षमता योग्यता के अनुसार ऋषि ऋण से उऋण होने का प्रयास करें। तमसो मा ज्योतिर्गमय।

-आचार्य कर्मवीर

प्रासंगिक

"ऋषि दयानन्द और दीपावली पर्व"

- मनमोहन कुमार आर्य

वेद मनुष्यों को ज्ञानी बनकर देश व समाज को ज्ञान से लाभान्वित करने की प्रेरणा देने के साथ उसकी अन्याय व शोषण आदि से रक्षा करने तथा अन्नादि पदार्थों के देश में अभावों को दूर करने के लिए किसी एक कार्य को चुनने व करने की प्रेरणा देते हैं। कृषि व वाणिज्य आदि कार्यों को करके देश से अभाव दूर करने वाले मनुष्यों को वैश्य वर्ण में सम्मिलित किया जाता है। दीपावली वैश्य वर्ण का पर्व है जिसे सामाजिक समरसता की दृष्टि से सभी देशवासी मिलकर प्राचीन काल से मनाते आ रहे हैं। कार्तिक महीने की अमावस्या के दिन इस पर्व को मनाये जाने के अन्य कारण भी हैं। यह पर्व वर्षा ऋतु की समाप्ति के बाद मनाया जाता है। वर्षा ऋतु के कारण गृहों के भवनों में नमी व सीलन आ जाती है। भवनों में लिपाई पुताई सहित मरम्मत आदि की भी आवश्यकता होती है। दीपावली से पूर्व इन कार्यों को करके गृहों को स्वच्छ व सुन्दर बनाया जाता है। अशिक्षित लोगों में यह जनश्रुति है कि इस दिन घर को लीप-पोत कर लक्ष्मी पूजा करने से धन की लक्ष्मी घर में प्रवेश करती है और परिवार धन सम्पन्न होता है। हमने अपने परिार में बचपन में ही इस प्रकार की भावनाओं को देखा है। यहां तक की रात्रि में घर के मुख्य द्वार को खोलकर सोते थे जिससे लक्ष्मी दरवाजे को बन्द देखकर लौट न जाये। समय के साथ मनुष्य अपनी सोच व विद्या आदि के द्वारा अपने पर्वों में भी सुधार करता रहता है। महर्षि दयानन्द (१८२५-१८८३) के प्रादुर्भाव और उनके वेद प्रचार के कार्यों से देश में जागृति आयी और लोग पर्व का महत्व समझने लगे। पर्व का अर्थ मनुष्य के जीवन में निराशा को दूर कर उत्साह एवं उमंग का संचार करना होता है। इसके साथ प्रमुख धार्मिक पहलुओं को भी जोड़ दिया जाता है, जिससे हम अपने धर्म व संस्कृति को जानकर उससे जुड़े रहें और हमारी आस्था व निष्ठा धर्म व संस्कृति के मूल तत्वों सदाचार, अहिंसा, सत्य, असत्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय एवं ईश्वर प्रणिधान आदि में बनी रहे। ऋषि दयानन्द ने हमें बताया था कि मनुष्य को सभी शुभ अवसरों पर सन्ध्या एवं देवयज्ञ अग्निहोत्र का अनुष्ठान अवश्य करना चाहिए। इससे हम ईश्वर से जुड़ते है और जीवन के सभी छोटे व बड़े कार्यों में हमें ईश्वर का सहाय प्राप्त होता है। ईश्वर की स्तुति व प्रार्थना करने का एक लाभ यह भी होता है कि हम अहंकार से बचते हैं। ईश्वर सबसे महान है और वही हमारे कर्मों के आधार पर हमें सुख व दुःख प्रदान करता है। यदि हम कुछ भी अनुचित करेंगे तो ईश्वर उसका दुःख रुपी दण्ड अवश्य देगा। इस ज्ञान से हम पक्षपात व अन्याय रुपी कर्मों से बच कर अपने जीवन को दुःखों से बचाते और सुखों से युक्त रखते हुए धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष के मार्ग पर आगे बढ़ते हैं।

दीपावली पर्व पर खरीफ की फसल किसान के घर में आती है। चावल इस फसल का प्रमुख अन्न होता है। इसे प्रतीक मानकर इसको भून कर खीर बनायी जाती है और इससे यज्ञ सम्पन्न कर इसका पड़ोसियों में वितरण कर भक्षण किया जाता है। हम बचपन में खीर को चाय में डालकर खाते थे और इसके साथ चीनी से बने बतासे तथा खिलौने साथ में खाते थे तो यह अत्यन्त स्वादिष्ट लगता था। आज के बच्चे सम्पन्नता आदि के कारण इसका सेवन छोड़ चुके हैं। नई फसल के स्वागत के लिये ही किसान व अन्य सभी मनुष्य मिलकर इस दीपावली के पर्व को मनाते हैं। यही दीपावली पर्व का मुख्य आधार है। मनुष्य के जीवन में सबसे अधिक महत्व वायु, जल और अन्न का होता है। परमात्मा ने वायु और जल को सर्वत्र सुलभ बनाया

है। मनुष्य को इनको उत्पन्न नहीं करना होता। अन्न उत्पन्न किया जाता है। किसान व सारा देश अन्न पर ही आश्रित है। यदि अन्न न हो तो यह संसार नहीं चल सकता। अन्न मनुष्य जीवन की प्राथमिक अनिवार्य आवश्यकता है। पर्याप्त अन्न न मिले तो मनुष्य कुपोषण से ग्रस्त होकर शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। अतः किसान द्वारा खरीफ की फसल की प्राप्ति पर समस्त देशवासियों में प्रसन्नता, उत्साह एवं उमंग का वातावरण होना स्वाभाविक होता है। इसी की अभिव्यक्ति दीपावली पर्व के रुप में होती है।

एक किंवदन्ती यह भी प्रचलित है कि दीपावली के दिन ही मर्यादा पुरुषोत्तम राम लंका में रावण का वध कर सीता और लक्ष्मण सहित अयोध्या लौटे थे। अयोध्यावासी राम के आगमन से अतीव प्रसन्न थे। सबसे प्रसन्नता भरत जी को थी, जिन्होंने राम के वियोग में १४ वर्ष बहुत कष्टों एवं तपस्यापूर्वक व्यतीत किये थे। अतः राम के १४ वर्षों बाद अयोध्या आगमन के उपलक्ष्य में दीपावली के द्वारा अपनी प्रसन्नता को व्यक्त किया गया था। बाल्मिकी रामायण के अनुसार रामचन्द्र जी ने वर्षा ऋतु की समाप्ति के बाद सीता जी की खोज आरम्भ कराई थी। उसके बाद रामेश्वरम से लंगा तक सेतु तैयार किया गया था। सेतु तैयार होने के बाद सेना लंका पहुंची और राम-रावण युद्ध हुआ था। आजकल तो छोटे-छोटे सेतुओं में वर्षों लग जाते हैं। इस सेतु के बनने में कितना समय लगा होगा, उसका अनुमान करना कठिन है। रामायण के विवरण में स्पष्ट अनुमान होता है कि कार्तिक अमावस्या के अवसर पर तो सीता माता की खोज हो रही थी। अथवा खोज हो जाने के बाद समुद्र पर सेतु बन्धन का कार्य आरम्भ किया गया होगा। अतः दीपावली के अवसर पर रामचन्द्र जी के अयोध्या लौटने की बात ऐतिहासिक दृष्टि से युक्त नहीं है तथापि रामचन्द्र जी के महान् व्यक्तित्व के कारण यदि हम इस पर्व पर उनको भी स्मरण करते हैं तो हमारी दृष्टि में ऐसा करना अच्छी बात है। ऐसा करने से हमारे धर्म और संस्कृति की रक्षा होती है।

दीपावली के अवसर पर कुछ अनुचित पदार्थ भी प्रचलित है। द्यूत या जुआ खेलना निन्दनीय परम्परा है। वैदिक धर्म में द्यूत को बहुत बुरा बताया गया है। मनुष्य को कभी भी इसका सेवन नहीं करना चाहिये। दीपावली के अवसर पर बम व पटाखे फोड़ने का औचित्य समझ में नहीं आता। ऐसा करके हम अपनी प्राण चवायु को दूषित करने के अपराधी बनते हैं। इसका त्याग करना ही श्रेयस्कर है। दीपावली पर मिठाईयों का आदान-प्रदान भी खूब होता है। देश के मांसाहारियों के कारण आज शुद्ध दुग्ध मिलना दुष्कर है। अतः देश में कृत्रिम दूध व मावे से मिठाईयां बनाई जाती है, जो विष का काम करती है। मिठाईयों को सेवन भी स्वास्थ्य के लिये अहितकर होता है। मिठाईयों के सेवन व इसके वितरण से बचने का भी प्रयत्न करना चाहिये। खील, बताशे और चीनी के बने खिलाने हमारी पुरानी परम्परा में आते हैं। इसी का सेवन एवं वितरण उचित प्रतीत होता है। मिठाईयों के वितरण में धन-शक्ति के दिखावें से संस्कृति व परम्पराओं की रक्षा नहीं हो सकती। दीपावली एक धार्मिक पर्व के रुप में मनाना उचित है। इस अवसर पर वेद पाठ एवं वेदों का स्वाध्याय करना चाहिये। ईश्वर का ध्यान एवं बृहद यज्ञ का आयोजन कर वायु शुद्धि करनी चाहिये। राम, कृष्ण एवं दयानन्द जी भी सन्ध्या व यज्ञ करते कराते थे। वह हमारे धर्म व संस्कृति के मूतरूप हैं। उनका स्मरण और उनके अनुरुप जीवन बनाना हमारा कर्त्तव्य है। हम प्रतिदिन ईश्वर व अपने इन महापुरुषों को स्मरण करेगें तो हम आज भी इनसे सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा ग्रहण कर सकेंगे, जिससे हमारा जीवन सार्थक होगा और हम धर्म के मार्ग पर चलकर मोक्ष के लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश लिखकर वैदिक धर्म एवं संस्कृति के प्रचार व प्रसार का चिरकाल के लिये प्रवन्ध कर दिया है। आर्यसमाज सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार करता है। आर्यसमाज से इतर जिज्ञासु बन्धु भी इस ग्रन्थ को प्राप्त कर वैदिक धर्म में दीक्षित हो सकते हैं। ऐसे बहुत से विद्वान् हुए हैं जिनका जीवन सत्यार्थप्रकाश से ही बदल गया तथा वह इसके द्वारा ईश्वर के भक्त और वैदिक धर्म के अनुयायी बने।

ऋषि दयानन्द ने जीवन से जुड़े सभी महत्वपूर्ण प्रश्नों का समाधान वेद से प्राप्त किया था। वेद ज्ञान के

भण्डार हैं जिनका आविर्भाव सृष्टि के आरम्भ में ही परमात्मा से हुआ है। इसका उद्देश्य मनुष्यों को सन्मार्ग बताना और दुःखों से पृथक रखकर उन्हें सुख प्रदान करने सहित धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष प्राप्त करना है। वेद एवं वेदों पर आधारित ऋषियों के दर्शन, उपनिषद्, मनुस्मृति, सत्यार्थप्रकाश एवं ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि ग्रन्थ ही ऐसे ग्रन्थ हैं, जो मनुष्य की सभी शंकाओं का समाधान करते हैं और उन्हें दुष्कर्मों से बचाते तथा उन्हें ईश्वर का सान्निध्य प्रदान कराते हैं। वेदाध्ययन एवं तदनुरुप आचरण करने से मनुष्य सुखों से युक्त होकर अभ्युदय को प्राप्त होता है तथा भावी जन्मों उसकी आत्मा की उन्नति होकर नव मोक्ष के लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होता है। ऋषि दयानन्द ने मथुरा में सन् १८६३ में अपने गुरु प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी की पाठशाला में विद्या पूरी कर देशभर में घूमकर वैदिक ज्ञान का प्रचार व प्रसार किया। उनके समय में हमारे देश व विश्व में सर्वत्र अविद्या का प्रसार था। विद्या के प्रसार से अविद्या के पोषक अज्ञानी व स्वार्थी लोग उनके शत्रु बन गये थे। इस कारण जोधपुर में उन्हें विषपान कराने का षड़यंत्र किया गया था। यह विषपान ऋषि दयानन्द जी की मृत्यु का कारण बना। दीपावली ३० अक्टूबर १८८३ के ही दिन सायं लगभग ६.०० बजे उन्होंने मृत्यु का वरण करते हुए अपने प्राणों का उत्सर्ग किया था। ऋषि दयानन्द के दीपावली के दिन अपने प्राणों का उत्सर्ग करने से दीपावली पर्व में एक प्रमुख रुप में यह घटना भी जुड़ गई। वैदिक धर्मी आर्यों के लिये दीपावली का महत्व जहां एक प्राचीन पर्व के रुप में है वहीं ऋषि दयानन्द के बलिदान पर्व के रुप में भी है।

यह अवसर ऋषि दयानन्द के वेदोद्धार के महान कार्यों को स्मरण कर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करने का दिवस भी होता है। यदि वह न आते तो यह कहना कठिन है कि हमारा धर्म व संस्कृति विधर्मियों के प्रहारों व षड़यन्त्रों से बच पाती अथवा नहीं। देश भी आजाद होता, इसकी भी सम्भावना नहीं थी। महर्षि दयानन्द ने समाज को सद्ज्ञान देकर लोगों को उनके कर्त्तव्यों का बोध कराया था। उन्होंने ईश्वरोपासना एवं देवयज्ञ के प्रचार सहित स्त्रियों के सम्मान, शिक्षा व विद्या के विस्तार एवं देश की उन्नति सहित देश को स्वराज्य की प्राप्ति का मन्त्र व प्रेरणा भी की थी। ऋषि दयानन्द ने देश व विश्व में समग्र आध्यात्मिक एवं सामाजिक क्रान्ति की थी। उन्होने देश में प्रचलित सभी अन्धविश्वासों, मिथ्या परम्पराओं व प्रथाओं पर वैदिक ज्ञान के अनुसार प्रहार कर उनका निवारण करने का अभूतपूर्व एवं प्रभावशाली प्रयत्न किया था। राम व कृष्ण के बाद दयानन्द जैसा महान पुरुष इस धरती पर कहीं उत्पन्न नहीं हुआ। ऋषि दयानन्द ने ही ईश्वर का परिचय कराया है। वैचारिक धरातल पर उन्होंने हमें ईश्वर का प्रत्यक्ष भी कराया। हम ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव व स्वरुप से परिचित होने सहित उसकी प्राप्ति के साधन, सन्ध्या-उपासना एवं योगाभ्यास आदि से परिचित हुए। उनसे प्राप्त ज्ञान से ही हमारी आत्मा उन्नत होकर ज्ञान के आलोक से प्रकाशित हुई है। हम जन्म व मृत्यु के रहस्य को जान पाये हैं। सद्कर्मों के महत्व एवं दुष्कर्मों के परिणामों से भी उन्होंने ही हमें अवगत कराया था। उनके समस्त मानव जाति पर अगणित ऋण है जिन्हें चुकाया नहीं जा सकता। उन्होंने ही आध्यात्मिक उन्नति के लाभों को बताकर भौतिक उन्नति से जुड़ी जीवन को पतित व भविष्य को अन्धकारयुक्त करने वाली चेष्टाओं से भी सबको सावधान किया है। हम सत्यार्थप्रकाश व वेद की सहायता से सत्यासत्य का निर्णय कर सत्य का अनुशरण करें और अपने जीवन सहित अपने देश का भी कल्याण करें। अन्धविश्वासों व अविद्या से बचे रहे। यही उनके जीवन का सन्देश है। दीपावली मनाते हुए हमें उनको स्मरण कर उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिये और अपने जीवन को अध्यात्म एवं सामाजिक उन्नति से युक्त करना चाहिये।

पता : १९६, चुक्खूवाला -२, देहरादून-२४८००१

आठ गुण

अष्टौ गुणाः पुरुषं दीपयन्ति, प्रज्ञा च कौल्यं च दमः श्रुतं च।
पराक्रमश्चाबहुभाषिता च, दानं यथाशक्ति कृतज्ञता च ॥

भावार्थ - हे राजन् ! दूरदर्शिनी बुद्धि, कुलीनता, मन और इन्द्रियों का निग्रह, शास्त्र-अध्ययन, पराक्रम, मितभाषण, अपनी शक्ति के अनुसार दान देना और किये हुए उपकार को मानना - ये आठ गुण मनुष्य को चमका देते हैं, उसकी कीर्ति को फैला देते हैं।

सामयिक

नि:शुल्क चयन प्रणाली से ही भ्रष्टाचार मिटेगा.

- रघुराज शास्त्री, राष्ट्रीय अध्यक्ष विद्यार्य सभा

इस समय भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए भाजपा सरकार बहुत जोर लगा रही है। लगाना भी चाहिए। लेकिन भ्रष्टाचार की जड़ को समाप्त नहीं करना चाहते। भ्रष्टाचार के मूल में है प्रत्याशियों का अकूत धन खर्च करना। जो प्रत्याशी १०१० करोड़ रुपये खर्च कर चुनाव जीतता है और मन्त्री बन जाता है वह कितना धन खर्च करता है। यह किसी भी विधायक या मन्त्री से पूछिये या किसी प्रकार से जानिए। पता चल जायेगा कि इतना धन तो विद्वान्, सदाचारी कहां से लगायेगा और वह जब इतना धन चुनाव प्रक्रियामें नहीं लगा पाएगा तो कैसे मन्त्री, विधायक बन पाएगा। चक्र यह चल रहा है कि पहले धन निवेश करो फिर लाभ कमाओ। राजनीति नहीं यह अच्छा व्यापार है जिसमें घाटा ही नहीं।

धन निवेश करने के पश्चात् विधायक, मन्त्री बनने पर सरकारी धन को इस तरह लूटते हैं जैसे डकैत। कैसे ? चोरी उसे कहते हैं जिसे मालिक न जान पाए और धन चुरा लिया जावे। लेकिन डकैती में मालिक जान रहा है कि यह लूट रहा है किन्तु बोलने की हिम्मत मालिक नहीं कर पाता है। यदि करता है तो जीवन से भी हाथ धो लेता है अर्थात् माल भी गया जान भी गई। जनता रुपी मालिक यह जानती है कि जो मन्त्री या विधायक इतना धन लगा रही है वह लूटेगा अवश्य किन्तु कुछ बोलती नहीं। हम लोग भी अपने-अपने स्वार्थवश उसे कुछ नहीं कहते।

विधायक या मन्त्री अपनी विधायक निधि से या विकास निधि से जो भी धन उन्हें मिलता है पहले अपनी क्षतिपूर्ति करते हैं फिर भावी चुनाव के लिए धन एकत्र करते हैं। विकास के नाम पर जनता के आंसू पोंछ दिए जाते हैं। यह है भ्रष्टाचार का चक्र।

इस चक्र को तोड़ने के लिए हमें अपनी पुरानी चयन प्रणाली लानी पड़ेगी जिसमें जनता का कुछ भी खर्च नहीं होता केवल सरकार का ही कुछ धन व्यय होता है जो नाम मात्र का ही है। इस चयन प्रणाली का मन्त्र है -

इदं कसाम्बु चयनेन चितम्,
तत सजाता अव पश्यतेत ।
मत्यों ऽयमम् तमत्वयेति,
तस्मै गृहान् कृणुतयावत सम्बन्धु ॥

अर्थ. १८/४/३७

वेद का यह मन्त्र चयन प्रणाली की ओर संकेत कर रहा है किन्तु हम उसे अनसुना कर रहे हैं। उस संविधान को मान रहे हैं, जो भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहा है। वर्तमान समय की चुनाव प्रणाली में ही दोष है जिससे राष्ट्र में भ्रष्टाचार फैल रहा है।

चुनाव आयोग भी भ्रष्टाचार को बढ़ाने में सहयोगी कर रहा है। कहता है २०-२० हजार रु. लेने में कोई कर नहीं लगेगा। कांग्रेस, भाजपा, सपा, बसपा, कम्युनिस्ट आदि जितनी भी पार्टियां है सबों ने करोड़ों अरबों रुपये अपने-अपने खाते में जमा कर रखा है। इस जमा धन से आयकर नहीं लिया जाता, क्योंकि उन्हीं नेताओं को कानून बताना है वे क्यों ऐसा पाप कर रहे हैं। यह आवाज जनता को मिलकर उठानी चाहिए कि जैसे किसी व्यापारी या उद्योगपति आदि से आयकर लिया जाता, उसी प्रकार राजनैतिक दलों को भी उसी अनुपात में आयकर देना चाहिए। लेकिन बिल्ली के गले

में घण्टी कौन बांधे। कांग्रेस, भाजपा आदि मुख्य दलों ने अरबों रुपये पार्टी फण्ड में जमा कर रखा है और आयकर से मुक्त है। अगर ये दल देशप्रेमी हैं तो इन्हें भी कर देना चाहिए और ईमानदारी का परिचय देना चाहिए।

पहले तो ये दल आय-व्यय का ब्यौरा ही नहीं देते थे, किन्तु जब जनता का दबाव बढ़ा तो आय-व्यय का विवरण एवं चुनाव के समय आयोग को अपनी सम्पत्तियों का ब्योरा देना शुरु कर दिया है। वह भी स्विस बैंकों में जमा धन का ब्योरा नहीं देते हैं क्योंकि चोरी का धन विदेश में जमा कर रखा है। सभी पार्टियों के नेताओं का धन विदेशी बैंकों में जमा है जिसके लिए स्वामी रामदेव जी ने २०१० में रामलीला मैदान में अनशन किया था। उस समय वहीं कांग्रेसी सरकार की शैतानी सभी को याद है। यदि स्वामी जी शिवाजी की नीति से न चलते तो जान गवां बैठते। राजार्य सभा ने कई बार चुनाव आयोग को निःशुल्क चयन पद्धति का खाका भेजा है किन्तु संविधान का नाम लेकर लागू नहीं कर रहा। लेकिन नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय। बिना इस पद्धति के भ्रष्टाचार नहीं मिट पायेगा।

पता - गुरुकुल शाही पीलीभीत (उ.प्र.)

इस संसार में

क्या-क्या खेल हो रहे इस संसार में।
पानी भी बिक रहा बाजार में।।
दूध है सस्ता- पेप्सी-कोका कोला महंगा
भैंस हो गयी घोड़ी-गाय बिक रही कौड़ी-कौड़ी
क्या-क्या खेल हो रहे इस संसार में।
पानी भी बिक रहा बाजार में।।
डिग्री मिलती फुटपाथों पर
गंवार हो रहे हावी संसद पर
हिन्दी से रही चुपके-चुपके
अंग्रेजी मार रही महफिल में ठुमके
क्या-क्या खेल हो रहे इस संसार में।
पानी भी बिक रहा बाजार में।।

000

- *मुकेश कुमार* (एम.ए. अंतिम)
५०/५२, रिहावली, फतेहाबाद (आगरा) उ.प्र.

आत्म ज्ञान भी जरूरी है

इस संसार में जानने योग्य अनेक बातें हैं! विद्या के अनेकों क्षेत्र हैं, खोज के लिए, जानकारी प्राप्त करने के लिए अ नित मार्ग है। अनेकों विज्ञान ऐसे हैं जिनकी बहुत कुछ जानकारी प्राप्त करना मनुष्य की स्वाभाविक वृत्ति है। क्यों? कैसे? कहाँ? कब? के प्रश्न हर क्षेत्र में फेंकता है। इस जिज्ञासा के भाव के कारण ही मनुष्य अब तक इतना ज्ञान सम्पन्न और साधन सम्पन्न बना है। सचमुच ज्ञान ही जीवन का प्रकाश स्तम्भ है। जानकारी की अनेकों वस्तुओं में से अने आपकी जानकारी सर्वोपरि है। हम बाहरी अनेकों बातों को जानते हैं या जानने का प्रयत्न करते हैं पर यह भूल जाते हैं कि हम स्वयं क्या हैं? अपने आपका ज्ञान प्राप्त किए बिना जीवन का क्रम बड़ा डाँवाडोल, अनिश्चित और कंटकाकीर्ण हो जाता है। अपने वास्तविक स्वरूप का जानकारी न होने के कारण मनुष्य न सोचने लायक बातें सोचता और न करने लायक कार्य करता है। सच्ची सुख शान्ति का राजमार्ग एक ही है और वह है "आत्म-ज्ञान"।

वार्धक्य अभिशाप नहीं, वरदान है

(जाने जीवन की कला) **१ अक्टूबर-अन्तर्राष्टीय वृद्ध दिवस**

- पंडित राकेश आर्य

'वृद्ध' शब्द साधारण : शक्तिहीनता, गतिशून्यता और जर्जरता का प्रतीक माना जाता है । संस्कृत में एक शब्द है - 'वृद्धि'। यह शब्द सामान्यतः बढ़ोतरी, वृद्धि या उन्नति का सूचक है । आचार्य पाणिनी ने इसी शब्द से व्याकरण शास्त्र का आरम्भ किया है। आचार्य के अनुसार वृद्ध वही है जो वृद्धि को प्राप्त कर लें। '**वृद्धिर्यस्य सोऽयं वृद्धः** ।' इस दृष्टि से वृद्ध शब्द गरिमा तथा पूर्णता का परिचायक है । भारतीय संस्कृति में वृद्ध को कभी भी असम्मान की दृष्टि से नहीं देखा गया है। भारतीय मनीषियों ने वार्धक्य को हमेशा ससम्मान स्मरण किया है। भारत की परम्परा ने वृद्धों में ज्ञान और अनुभव की वृद्धि को देखकर उन्हें लोकोपकारक माना है । इसलिए ज्ञानवृद्ध वयोवृद्ध इत्यादि शब्दों का प्रचलन हुआ! वृद्धों की गरिमा को प्रकट करते हुए किसी ने कहा है -

अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः ।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम् ॥

यहां वृद्धों को अभिवादन करने से आयु, विद्या, यश और बल के बढ़ने की बात कही गई है । वृद्ध शब्द अत्यन्त महत्वपूर्ण है, इसकी गरिमा हम वृद्धों ने ही कम की है। लक्ष्यहीनजीवन और वर्णाश्रम व्यवस्था के लोप ने वृद्धों की स्थिति को अत्यन्त दयनीय बना दिया है। उनका सम्मान न तो घर में है, और न ही समाज में।

वृद्धों की समस्याएँ -

वृद्धों की समस्याएँ हैं -१. अकेलापन २. गिरता स्वास्थ्य ३. आर्थिक स्थिति ४. समय या सेवानिवृत्ति।

वृद्धों की समस्याओं पर सरकार और समाज में चर्चा होती रहती है। कभी कानून बनाने की बात होती है, तो कभी पेंशन देने की । चित्रपट पर 'बागबान' और 'मुन्नाभाई' समाज में वृद्धों की स्थिति को यदा-कदा उठाते भी हैं, किन्तु समस्या दिन-प्रतिदिन विकराल हो रही है। भारतीय समाज में 'वृद्धाश्रम' बनाये जा रहे हैं, यह वृद्धों के साथ सबसे बड़ा अन्याय है। यहाँ वानप्रस्थ हों, सन्यासाश्रम हो, जहां वृद्ध स्वेच्छा से जीवन में तप और ज्ञान की वृद्धि के लिए जाये। वृद्धाश्रम मजबूरी है इच्छा नहीं, मजबूरी को आदर्श नहीं कहा जा सकता।

समाधान - सीनियर सिटीजन्स पर आयोजित सभी सेमिनार आरोप और प्रत्यारोप में निकल जाते हैं। समस्याएं यथावत् रहती है । हमें अपनी समस्याओं का समाधान खुद ही निकालना होगा।

१. वृद्ध अकेले रहने की प्रवृत्ति को छोड़ें। परिवार के सदस्यों और समाज के वर्गों मेल जोल बढ़ाये । इस उम्र में अपनी सामाजिक सक्रियता को धीरे-धीरे बढ़ाये। एक घर में कैद होने की प्रवृत्ति से वृद्ध असुरक्षित हो रहे हैं। भ्रमण, मनोरंजन तथा समाचार पत्रों को पढ़ना न भूलें। भावी-पीढ़ी के साथ अधिक से अधिक समय बितायें । जहां तक संभव हो, आत्मनिर्भर बने रहें।

२. स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें। योग-साधना को अपनी दिनचर्या का अङ्ग बनायें । अपने विचारों में सकारात्मकता लायें । आध्यात्मिक सत्संग करें । नकारात्मक विचारों को दूर रखें। व्यवहार को लचीला बनाये रखें । परिजनों की अनदेखी या छोटी मोटी गलतियों को 'नाक' का मुद्दा न बनायें।

३. अपने जीवन की प्लानिंग ऐसे करें कि उम्र के इस पड़ाव में परावलम्बी न बनना पड़े। जीवन को संयमी बनायें, फिजूल खर्ची से बचें। इंश्योरेंस, पेंशन या अपनी अचल सम्पत्ति का एक निश्चित हिस्सा स्वयं तथा अपने जीवन साथी के लिए अवश्य रखें।

४. सेवानिवृत्ति को सेवाप्रवृत्ति बनायें। साधारणतः व्यक्ति सेवा निवृत्ति को अपनी सेवा या अपने कार्यों की समाप्ति मान लेता है, इसलिए समय काटने लगता है और बुढ़ापा हावी होने लगता है । सतत क्रियाशीलता हमारी कार्यक्षमता को बढ़ाती है। अमिताभ बच्चन के सदाबहार

होने का यही रहस्य है। वार्धक्य में धार्मिक सेवा केन्द्रों, सत्संगों तथा सामाजिक कार्यों में स्वयं को प्रवृत्त करें।

स्वामी रामतीर्थ एक बार विदेश प्रवास में थे। उन्होने कांपते हुए एक वृद्ध के हाथों में एक किताब देखी। वह वृद्ध कुछ सीखने का प्रयास कर रहा था। उसकी उम्र ८०-९० के आसपास थी, स्वामी जी ने उससे पूछा तो उस वृद्ध ने बताया कि वह चीनी भाष सीख रहा है। चीनी भाषा दुनिया की कठिनतम भाषाओं में है। उम्र के इस पड़ाव में उसे सीखने की इच्छा यह अप्रतिम जिजीविषा का एक उदाहरण है। स्वामी जी ने अपनी डायरी में लिखा है - इसे वृद्ध कौन कह सकता है। इसकी जिजीविषा युवाओं से अधिक प्रबल है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्रसंगवश सत्यार्थप्रकाश में एक श्लोक उद्धृत किया है - **न तेन वृद्धो भवति येनास्य पलितं शिरः।**

ऋषि की दृष्टि में झुर्रियों के आ जाने उम्र के बढ़ जाने से आदमी वृद्ध नहीं होता- ज्ञान, तप और अनुभव की वृद्धि से ही व्यक्ति वृद्ध बनता है, इसीलिए वयोवृद्ध से ज्ञानवृद्ध बड़ा होता है। आइये, इस अन्तर्राष्ट्रीय वृद्ध दिवस पर संकल्प लें कि हम 'वृद्ध' बनेंगे, बूढ़े नहीं। जीवन भर ज्ञान, तप, अनुभव, सत्य, पुण्य, तेज, बल और यश की वृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहेंगे।

वृद्धत्व वरदान है, अभिशाप नहीं।

पता : **सुमन ट्रेडर्स**, नेहरु नगर, रायपुर (छ.ग.)

सब वेद पढ़ें, सुविचार बढ़े

महापुरुषों के वाक्यों को पढ़ते समय उनके व्यक्तित्व की गरिमा भी आपको प्रभावित करती है, जिससे अचेतन मन वैसा करने या न करने को विवश हो जाता है। इस प्रकार की बेबसी की स्थिति व्यक्तित्व के विकास के लिए अनुकूल वातावरण पैदा करती है, क्योंकि तब आपके मन के पास मनमानी करने का न तो अवसर होता है न ही सामर्थ्य। अनुभव में एक बात और आई है कि कभी-कभी आपकी ऐसी शंका का समाधान एक छोटा-सा वाक्य कर जाता है, जिसके लिए आप लम्बे समय से भटक रहे होते हैं। **"देखन में छोटे लागे, घाव करे गंभीर"** वाली इन वाक्यों के साथ लागू होती है। बातचीत करते समय, भाषण देते समय, बहस करते वक्त या लिखते समय जब आप इन वाक्यों द्वारा अपने कथन की पुष्टि करते हैं तो आपकी बात में वजन आ जाता है। आपके व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाने में इससे सहायता मिलती है। सुनने-पढ़ने वाले कुएं का मेढक नहीं समझते।

वैदिक ज्ञान के बिना संसार का और अपने आपका वास्तविक ज्ञान संभव नहीं है। कोई कितना भी पलायन करे किन्तु एक दिन वैदिक ज्ञान का शरण लेना ही पड़ेगा। महर्षि दयानन्द ही एक ऐसे ऋषि हुये जिन्होने वेदों को स्वतः प्रमाण मानते हुए वेदों को पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म बताया है। **रहिमन देखि बड़ेन को लघु न दीजिये डारी, जहां काम आवे सुई कहा करे तरवारी,** की उक्ति को चिंतन करने से दोनों की उपादेयता समय और स्थान से सिद्ध होती है।

- अनिल आर्य, रायपुर

विश्लेषणात्मक

ईश्वर की सत्ता है

- ओमप्रकाश अग्रवाल

(१) गायत्री मंत्र में सविता देवता, ईश्वर का स्वरुप इस प्रकार दिया है -

भूः	भुवः	स्वः
सत्	चित्	आनन्द
प्रकृति	चेतनजीव	ईश्वर

(२) जीवन में व्यवहार करते समय भी ईश्वर की सत्ता का प्रमाण मिलता है। सत्यार्थ प्रकाश में ऋषि ने कहा है - अच्छे कार्य में आन्तरिक प्रोत्साहन प्रतीति और बुरे कार्य में सन्देह, संकोच, लज्जा ईश्वर की ओर से है, न कि मनेन्द्रिय की ओर से।

(३) इन्द्रियों की अनुभूतियाँ यथार्थ हैं, मिथ्या नहीं है। यदि ये अविश्वसनीय हैं तो ऐसे दुष्टों को, ईश्वर ने इन्द्रियों को हमारा आजीवन अभिन्न मित्र क्यों बना दिया है ? यदि ये मिथ्या हैं तो निर्माता सहित जगत् मिथ्या क्यों नहीं माना जाए ?

(४) अतः इन्द्रियाँ न अविश्वनीय हैं, न जगत् मिथ्या है और न ही निर्माता एक भ्रम है।

(५) आविष्कार : आविष्कार यह सिद्ध करते हैं कि आविष्कर्ता अल्पज्ञ है, अनभिज्ञ है। आज भी अनेक रहस्य यथावत् अज्ञात हैं। एक अल्पज्ञ जीव सृष्टि निर्माता सम्पूर्ण सृष्टि का निर्माता नहीं हो सकता है।

(६) सृष्टि के लिए प्रयुक्त सामान्य तीन शब्दों का अर्थ है -

(१) सृष्टि = सृज्+क्तिन् = बनना।
(२) संसार = सम्यक् सरकना/निकलना।
(३) जगत् = गम् से बना, जो गति करता है, चलायमान है।

(७) प्रत्येक निर्माण का आदि और अन्त है, अतः निर्माता अवश्यमेव है।

(८) सृष्टि के निमित्त कारण का प्रत्यक्ष और अनुमान होता है।

(९) नास्तिक (अनीश्वरवादी) के पास दृष्टान्त का अभाव है, इसलिए कि दृष्टान्त दोनों पक्षों को स्वीकार्य होना चाहिए, न कि केवल नास्तिक को स्वीकार्य होना।

(१०) विज्ञान और ईश्वर :- न्यूटन आदि अनेक वैज्ञानिक ईश्वर की सत्ता स्वीकार कर चुके हैं। ईसाइयों के बाइबिल के प्रति दुराग्रहों के कारण विज्ञान विरुद्ध धर्म विवाद उठा है, वैदिक धर्म के कारण नहीं।

(११) विज्ञान जगत् के उत्पत्ति क्रम की व्याख्या करता है, इसके हेतु या कारण की नहीं।

(१२) संसार में कर्म हैं, कर्म फल हैं, पुनर्जन्म हैं तो कर्मफलदाता ईश्वर अवश्य है, क्योंकि अपनी इच्छा से कोई कारावास में नहीं जाता है।

(१३) सृष्टि नियम :- स्थिर है एवं बुद्धिपूर्वक है। स्थिर नियमों के विरुद्ध चमत्कारों को मानने के कारण ही ईश्वर की सत्ता पर आक्षेप हुआ है, जिनका पटाक्षेप चमत्कार को दुत्कारे बिना नहीं हो सकता है। यह इसलिए कि नियमों के कारण ही वह नियन्ता=ईश्वर है तो नियमोल्लंघन में उसी का खण्डन, अस्वीकरण होता है। इसलिए चमत्कार मानवीय कृत्य हैं, ईश्वरीय नहीं।

(१४) ईश्वर के निम्न प्रधान गुण है -

(अ) एकमेव है - न द्वितीय न तृतीयों न चतुर्थो न....। (अथर्ववेद)

(ब) सर्वव्यापक - इसी से वह सर्वकल्याणकारी, न्यायकारी दयालु है।

(स) सर्वज्ञ - सर्वज्ञता के नाते वह सब जानता है- **विदेमते परमेजन्मन्** (यजु. १७-७४) कदाचित यही मंत्रांश, गीता के **तमहं जानामि सर्वाणि** का स्रोत है।

(द) सर्वशक्तिमानता :- ईश्वर सर्वशक्तिमान है, किन्तु सर्व क्रियावान् नहीं है। वह अपने कार्यों के करने में स्वतन्त्र एवं सक्षम है, अपने नियमाधीन है। सर्व क्रियावान को ऐसे समझें कि वह अपने को समाप्त नहीं कर सकता या मार नहीं सकता है। वह दो चार नये ईश्वर नहीं बना सकता और न ही त्रिकोण को वृत्त नहीं बना सकता है। वह गेहूं भले ही बना दे रोटी नहीं बना सकता है।

(१५) ईश्वर का मानना व्यवहारिक भी है। इसमें बुद्धि और अन्तःकरण भी साक्षी हैं।

(१६) ईश्वर को मानने से साधक का कल्याण तथा नैतिक उत्थान होता है। इस महान उद्देश्य की प्राप्ति के अतिरिक्त वह देवतावाद, शुद्र एवं संकीर्ण साम्प्रदायिक आदि से बच जाता है।

(१७) क्या ईश्वर जीवों के भावी जन्म एवं घटनाएँ जानता है। इसका उत्तर मनुष्य के लिए है कि जो घटा ही नहीं उसे जानने की आवश्यकता नहीं है। हाँ, ईश्वर काल-क्रम-नियमानुसार सब कुछ जानता है, इसलिए कि कर्मफल भी उसे ही देना है तथा उसे कर्म करने में हस्तक्षेप भी नहीं करना है। ऋषि दयानन्द ईश्वर को कालातीत मानते हैं और जीवों के भविष्य में घटने वाले कर्मों का भी ज्ञाता मानते हैं, जबकि स्वामी दर्शनानन्द जी ऐसा नहीं मानते हैं।

मूल लेखक:- ओमप्रकाश अग्रवाल, आर्यसमाज उज्जैन (म.प्र.)

प्रस्तोता : रमेशचन्द्र चौहान, २६२-ए, पार्श्वनाथ नगर, इन्दौर-९ (म.प्र.)

दयानन्द

उत्पद्यन्ते म्रियन्ते च बहवः क्षुद्रजन्तवः।
दयानन्द समोलोके न भूतो न भविष्यति॥

अर्थात् - असंख्य प्रकार के जीवात्माएँ महामानव के रुप में धरती पर निरन्तर जन्म लेने के साथ-साथ मृत्यु को भी वरण कर रहे हैं। किन्तु दयानन्द सा महामानव दूसरा न कोई हुआ और ना ही होगा।

ऋषिवर का सन्देश

- गौरीशंकर वैद्य 'विनम्र'

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्, ऋषिवर का सन्देश।
वेदविहित आचरण से, पावन हो परिवेश॥

दयानन्द सरस्वती का, हितकर दृढ़ मन्तव्य।
वेदों के पथ पर चलो, पाओगे गन्तव्य॥

धरती पर है वेद ही, सत्य ज्ञान-आगार।
क्षण-क्षण में है मुखर, ईश्वर के उद्गार॥

मानव को घेरे हुए, वैमनस्य, दुःख लोभ।
वेद ज्ञान से ही कटे, सांसारिक-विक्षोभ॥

वेद-ज्ञान से ही कटें, शाश्वत मूलाधार।
आओ ! जन-जन से करें, मंगल वेद प्रचार॥

ऋषि-ऋण से होवें उऋण, चलें वेद के अनुसार।
ज्ञान-भार है क्रिया बिन, पोथी पढ़ो हजार॥

दयानन्द जी ने किया, हिन्दी उत्थान।
उसका हम सब विश्व में, और बढ़ाएँ मान॥

अग्निदूत जन-जन बने, लाए वैदिक-क्रान्ति।
जाति-पांति अज्ञानता, मिट जाए दिग्भ्रान्ति॥

जो कण-कण में व्याप्त है, तस्य न प्रतिमा अस्ति।
पुष्प- धूप, जल कौन ले, कैसे सुने प्रशस्ति॥

प्राणि मात्र से प्रेम ही, सच्चा पूजा-पाठ।
सिखलाओ मत किसी को, सोलह दूनी आठ॥

वेद रुप में ईश का, रंगमयी अवतार।
उच्च कोटि विज्ञान भी, पा न सकेगा पार॥

००-००

पता : ११७, आदित नगर, विकास नगर, लखनऊ-२२६०२२

जीवन-दर्शन संयोग – एक अनबूझ पहेली

– ओमप्रकाश बजाज

संयोग हमारे जीवन में बहुत बड़ी और बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, संयोग कैसे बनते हैं, कैसे घटित होते हैं । यह कोई नहीं जानता । सम्भवतः यही कारण है कि वह संयोग कहलाते हैं, संयोग का शाब्दिक अर्थ ही है -" दो या कई बातों का अचानक एक साथ होना", उर्दू में इसे "इत्तफाक" कहते हैं। अंग्रेजी भाषा का "कोईंसिडैंस" भी संयोग ही है। संयोग को ही "संजोग" भी कह दिया जाता है। "संयोग" अर्थात् अचानक ऐसा कुछ घट जाना, घटित हो जाना, जिसका कहीं दूर-दूर तक वहम और गुमान भी न हो ।

संयोग हम में से हर एक के जीवन में घटते हैं। चाहे हम उन्हें संयोग की संज्ञा दें या न दें। कई संयोग तो किसी चमत्कार से कम नहीं होता। ऐसा भी कहते हैं कि यदि कोई काम बनना या होना होता है तो कोई न कोई संयोग बन ही जाता है। देश विभाजन के तुरन्त बाद की बात है। मैं नौकरी की तलाश में कानपुर आ पहुंचा था। जिनके यहाँ ठहरा था उन्होंने एक दिन अपनी बीमा किस्त जमा करने को दे दी। कार्यालय में पता चला कि विलम्ब के कारण आठ आने जुर्माना देना पड़ेगा, मेरे पास आठ आने भी नहीं थे। बाबू ने कहा मैनेजर साहिब से मिल लो, जुर्माना तो उन्होंने माफ कर दिया। यह भी कहा कि तुम्हारी अंग्रेजी बहुत अच्छी है। लिखावट भी सुंदर है, कहां काम करते हो, मैंने बताया कि नौकरी ढूंढ रहा हूं। मुझे वहीं पर नौकरी मिल गई। इसे संयोग के अतिरिक्त और भला क्या नाम देंगे।

अनेक ऐसी घटनाएँ देखने, सुनने व पढ़ने में आती रहती है कि अच्छी खासी बारात आई। स्वागत सत्कार हुआ, पर वर पक्ष की ओर से अचानक कोई नई बड़ी मांग रख देने के कारण बारात लौट गई। ऐसी परिस्थिति में अचानक किसी साहसी युवक ने आगे बढ़ कर कन्या का हाथ थामने का प्रस्ताव किया और विवाह उसी मुहूर्त में सम्पन्न हो गया। इस प्रकार ऐसा कुछ घट जाना जो कुछ क्षण पहले तक किसी की कल्पना में भी नहीं था उसे संयोग के अतिरिक्त क्या कहा जा सकता है। संयोगवश घटने वाली घटनाओं की श्रृंखला बहुत लम्बी है। विचार करने पर हम में से हर एक स्वयं हमारे अपने साथ या हमारी जानकारी में घटित किसी न किसी संयोग का स्मरण अवश्य हो आएगा।

संयोग मात्र सुखद ही नहीं होते, दुखद भी होते हैं, हमारे सामने की कुछ दिन पूर्व की घटना है। नर्मदा के घाट पर हम कुछ परिवार पिकनिक मनाने हेतु गए थे। खेलना-कूदना, गप-शप, हंसी-मजाक, खाना-पीना चल रहा था। सब उल्लास और मस्ती के मूड में थे। अचानक एक बच्चा जो घाट के पास तैर रहा था गहरे पानी में चला गया और डूबने लगा। जब तक कोई कुछ समझे सोचे हमारे एक साथी उस अनजान बच्चे को बचाने हेतु नदी में कूद पड़े, और देखते ही देखते वहीं उनकी जल समाधि हो गई, न कोई जान न पहचान, न कोई रिश्ता न नाता, एक निपट अजनबी के लिए उन्होंने अपनी जान दे दी। अब इसे एक दुखद संयोग नहीं तो और क्या कहेंगे।

बेटे-बेटी के विवाह की चर्चा चलने पर बड़े बूढ़ों के मुंह से आम तौर पर सुनने को मिलता है कि संबंध तो वहीं होगा जहां संयोग होगा। संयोगों के प्रति हमारी सदा से चलती आई आस्था का एक रुप यह भी है। संयोगों का न तो कोई पूर्वाभास होता है और न उन पर हमारा कोई बस या नियंत्रण ही होता है। वह तो बस घट जाते हैं। विदेशों में हर बात पर शोध और अनुसंधान करने की परम्परा है। सम्भव है किसी ने संयोगों के घटित होने पर भी खोज की हो और कोई निष्कर्ष निकाला हो। वरना एक आम आदमी के लिए तो आज भी संयोग मात्र एक अनबूझ पहेली ही है।

पता : बी-२, गगन विहार, गुप्तेश्वर, जबलपुर - ४८२००१ (म.प्र.)

जीवन के साथ मृत्यु भी बन गई प्रेरणा

–आचार्य भद्रसेन

दीपावली पर्व पर विशेष

भारतीय परम्परा में अधिकतर महापुरुषों के जन्म दिन मनाये जाते हैं। परन्तु जिन महापुरुषों की मृत्यु किसी विशेष घटना के रूप में घटित हुई है, उनके शहीदी दिवस भी समारोह पूर्वक सम्पन्न होते हैं। महर्षि दयानन्द की मृत्यु स्वाभाविक नहीं थी, वह अपने पीछे एक विशेष पृष्ठभूमि रखती है। जैसे कि यह बात पूर्णतः स्पष्ट है कि अन्तिम दिनों में महर्षि के सारे शरीर पर फफोले पड़ गये थे और उन्हें बहुत बड़ी संख्या में दस्त भी आये थे। डाक्टर के इलाज से रोग उलटा बढ़ा था। उन दिनों की सारी घटनाएँ महर्षि की मृत्यु को एक योजनाबद्ध षड़यंत्र सिद्ध करती है। जब महर्षि को जोधपुर से लाया जा रहा था, तो मार्ग में एक डाक्टर (लक्ष्मण) अकस्मात् मिला, पता लगने पर उसने इलाज किया, जिससे कुछ लाभ हुआ। उसने महर्षि के पास रहकर उपचार करना चाहा, पर न तो उसका अवकाश स्वीकार किया गया और न ही त्यागपत्र।

महर्षि ने अपने जीवन के अन्तिम दिनों जिस प्रकार रियासतों के राजाओं को प्रभावित करना प्रारम्भ किया था और भारतीय जनता पर महर्षि के प्रचार का जिस प्रकार से अमिट प्रभाव पड़ रहा था, इसी के परिणामस्वरूप नवजागृति के साथ भारतीयों को एक सूत्र में पिरोने का प्रयास प्रारम्भ हो गया था। वह तात्कालिक विदेशी सरकार को नहीं सुहाया। तब महर्षि के विरुद्ध एक षड़यंत्र रचा गया, जो कि उनके निधन का कारण बना। अतः महर्षि की मृत्यु की घटना शहीदी पर्व की तरह अविस्मरणीय है। इसीलिए अत्यधिक समारोह के साथ प्रथम निर्वाण शताब्दी का आयोजन होना चाहिए।

हृदय विदारक - महर्षि का अन्तिम प्रयाण दृश्य

महर्षि के मृत्युकाल का वह घटना-चक्र अपने आप में एक अनूठा प्रसंग है। क्योंकि उसको देखने वाले साधारणजन ही नहीं अपितु बड़े-बड़े डाक्टर भी दंग थे। इतना अधिक शारीरिक कष्ट होने पर भी महर्षि ने बड़ी शान्ति और धैर्य के साथ इसे सहा तथा सहर्ष स्वयं मरण को स्वीकार किया। जिसको देख मनीषी गुरुदत्त एम.ए. नास्तिक से आस्तिक बनकर महर्षि के लक्ष्य को पूर्ण करने में अनवरत तत्पर हो गये।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन, विचार एवं कार्य भी अपने आप में एक अनुपम उदाहरण है। उन्नीसवीं शताब्दी में महर्षि ने एक वैचारिक क्रान्ति की। महर्षि के विचार व्यावहारिक, प्रगतिशील, जीवन्त, तर्कसंगत ही नहीं अपितु भारतीय शास्त्रों से प्रमाणित भी थे। अर्थात् जो भारतीय साहित्य और संस्कृति सहस्रों वर्षों से विद्यमान थी, परन्तु कुछ ने उसके समग्र स्वरुप को सामने न रखकर उसका एकांगीपन ही प्रचलित कर दिया। जिसके परिणामस्वरुप एक ईश्वर के स्थान पर अनेक देवी-देवताओं का पूजन, जन्मना ऊँचा-नीचापन, सामाजिक,

छूआछूत, स्त्री शिक्षा का विरोध और अनमेल विवाह आदि मान्यताएँ भारतीयों में प्रचलित हो गयी। महर्षि दयानन्द ने भारतीय शास्त्रों के प्रमाणों से ही उपर्युक्त रूढ़ियों का निराकरण करके जीवन का एक तर्कसंगत, जीवन्त, व्यावहारिक रूप उपस्थित किया। इस सम्बन्ध में अधिक लिखने की अपेक्षा हिन्दी भाषा जानने वालों के लिए महर्षि के अपने वाक्य अपने आप में स्वयं परम प्रमाण है। इन वाक्यों की विद्यमानता में यही कहना अधिक संगत है, कि हाथ कंगन को आरसी क्या और महर्षि के इन वाक्यों की उपस्थिति में उस सम्बन्ध में कुछ अधिक कहना सूरज को दीपक दिखाना या मुद्दई सुस्त गवाह चुस्त वाली ही बात होगी। जीवन के विभिन्न व्यवहारों के सम्बन्ध में मार्ग दर्शन करने वाले थे।

जब दुनियां रो पड़ी

एकदम लम्बा सांस लिया, फिर उसे वेग से छोड़ दिया।
इस नश्वर शरीर से तभी, आत्मा ने सम्बन्ध तोड़ लिया॥
सायंकाल छः बजे दीवाली की करोड़ों दिये जले।
तीन अक्टूबर अट्ठारह सौ तिरासी को ऋषि परलोक चले॥

स्वामी दयानन्द सरस्वती जग में सुखों के दाता थे।
बहुत बड़ा स्वाध्याय था उनका सब वेदों के ज्ञाता थे॥
महिलाओं और दलित जनों का बहुत बड़ा उद्धार किया।
आर्यसमाज के द्वारा उन्होंने दुनियां का उपकार किया॥

पाखण्डों से ऋषि दयानन्द ने जो अविराम युद्ध किया।
सही मार्ग दिखला करके भूले भटकों को शुद्ध किया॥
ब्रह्मचारी विद्वान थे और वह सत्यधर्म प्रचारक थे।
जात पात नहीं मानते थे निराकार के उपासक थे॥

उनके जीवन दर्शन से यह मेरी समझ में आया है।
स्वामी जी ने निश्चित ही मोक्षधाम पद पाया है॥
अपने सतत प्रयत्नों से प्राणी मात्र का कल्याण किया।
बड़ी अभागी रात थी वह उन्होंने जब प्रस्थान किया॥

महाकाव्य - दयानन्द गौरवगाथा (लेखक : अमरराम शर्मा 'दयानन्दी')

दयानन्द यदि चाहते तो समाज से दूरस्थ जंगलों में जाकर घोर तपस्या से मुक्ति को प्राप्त कर लेते, किन्तु देश और समाज की मुक्ति के समक्ष आत्म-मुक्ति की बात उनके लिये बहुत ही छोटी पड़ गयी थी। यही कारण था कि उनका स्वतन्त्र चिन्तन राष्ट्रीय मानस में नवीन प्राण फूंकने का मार्ग खोज रहा था। अपने मार्गानुसन्धान के कार्यकाल में वे यदा-कदा गुरुवर विरजानन्द जी से अवश्य मिल लेते थे। वे निरन्तर जनकल्याण के कार्य में लगे रहे। देशाटन करते हुए वे अपने क्रान्तिकारी विचारों से देश की जनता को अवगत कराते रहे। अन्ततः सन् १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना स्वामी जी ने की और "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का सूत्र प्रचारित किया। उनके मन में आजादी की तड़प इतनी थी कि उनके ग्रन्थों में स्थान-स्थान में उसका उद्घाटन होता है। आज भले ही वे हमारे बीच नहीं है किन्तु उनके स्वतन्त्रता सम्बन्धी विचार उनके ग्रन्थों के माध्यम से हमें परस्पर प्रेम तथा स्वतन्त्रता की रक्षा करने के लिए प्रेरित करते रहें। कार्तिक की अमावस्या को महर्षि का महाप्रयाण हुआ और जाते जाते असंख्य वैदिक धर्मियों का दीप प्रज्वलित कर गये। आओ, ऋषि का दीप बनकर उनके ग्रन्थों का स्वाध्याय कर प्रकाश फैलाएं।

महर्षि के मन में स्वतन्त्रता प्राप्ति की तड़प उदीप्त हो चुकी थी, अतः विद्याध्ययन के कार्यक्रम को निरस्त करके नर्मदा तट संगठन के कार्य में तल्लीन हो गये। और स्वामी दयानन्द सम्वत् १९१७ में स्वामी विरजानन्द के पास मथुरा पहुंचे तथा तीन वर्ष तक विद्याध्ययन करके गुरुदक्षिणा में जीवनदानी बनकर चल पड़े। पहले शैव मतावलम्बी बन वैष्णव मत का खण्डन करते रहे तथा इसके पश्चात् शैवमत का भी खण्डन आरम्भ कर दिया। यह परिवर्तन उनके निरन्तर चिन्तन एवं स्वाध्याय का परिणाम था।

वैचारिकी

आर्यवीर दल : उद्देश्य एवं महत्व

लेखकः डॉ. ज्ञानेन्द्र जिज्ञासु, जिज्ञासु परिसर विद्या-निकुंज, पो- ब्रह्मपुर-बदायूँ (उ.प्र.)

वैदिक काल से अद्यतन काल तक इतिहास साक्षी है प्रगतिशील जातियों का विकास "बुद्धि" और "शक्ति" के बिना कभी सम्भव नहीं हुआ, बुद्धिबल से नियन्त्रित क्षात्रबल के बिना कहीं भी कोई उपलब्धि नहीं होती, व्यक्तिगत जीवन में भी अकेले मस्तिष्क की रक्षा में दो हाथ सदैव तत्पर रहते हैं अस्तु जिस जाति के लोग जितने अधिक निर्भय और बलवान होंगे वह जाति स्वभाव से उतनी अधिक शक्तिशाली और अपनी जाति रक्षा में उतनी ही अधिक समर्थ होगी। अतः आर्य जाति में ऐसे आदर्श-बल को तैयार कर आर्य संस्कृति-आर्य जाति और आर्य धर्म के गौरव को संसार में फैलना-रक्षा करना व उसको प्रतिष्ठापित करना आर्यवीर दल का मुख्य लक्ष्य है। आर्यों को संगठित बनाये रखना व उनकी रक्षा करना आर्यवीर दल का मुख्य लक्ष्य है।

कहा जाता है सत्य स्वयं सिद्ध होता है, उसे प्रमाण की आवश्यकता नहीं होगी। किन्तु सत्य की यथार्थता की अनुभूति करने के लिए दूसरों को प्रमाण की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार सत्य स्वयं में प्रकाशवान होता है किन्तु ईर्ष्यालु, स्वार्थी व धूर्त्त उसे सदा धूमिल करने का कुत्सित प्रयास करते रहते हैं, अपने बनावटी प्रयत्नों से समाज को भ्रमित करते रहने के प्रयत्न करने जाने में उनका व्यक्तिगत हित निहित होता है ऐसे में आवश्यकता होती है सत्य की रक्षा के लिए उसके स्वरुप की प्रतिष्ठा के लिए "समर्थ शक्ति" की "क्षात्र-धर्म" की। इस संयुक्त "शक्ति-धर्म" का मिश्रित स्वरुप है "आर्यवीर दल"।

आर्यवीर दल के विषय में उसके महत्व एवं उद्देश्य को जानने से पूर्व यह जानना भी आवश्यक है कि 'आर्य' शब्द का योगिक अर्थ है 'श्रेष्ठ' और साहित्य में उसका प्रयोग श्रेष्ठ कुलोत्पन्न के लिए भी होता है उसकी शास्त्रीय व्याख्या निम्न लिखित है -

कर्त्तव्यामाचरन् कर्म अकर्त्तव्यमनाचरन्।
तिष्ठति प्रकृताचारे स तु 'आर्य' इति स्मृतः॥

जो कर्त्तव्य का पालन करे और अकर्त्तव्य से बचे जो सदाचार की मर्यादा पर स्थिर रहे उसे 'आर्य' कहते हैं।

'आर्य' शब्द को जब धर्म-संस्कृति या जाति शब्द के साथ जोड़ते हैं, तब उसका योग-रूढ़ि अर्थ लेना चाहिए तद्नुसार चूंकि ऋग्वेद से पूर्व की कोई भी क्रमबद्ध धार्मिक ऋचाएं विश्व में कहीं प्राप्त नहीं है, जिस समय मनुष्य जाति एक ही पालने में पल रही थी उस प्रारंभिक काल में वे लोग 'आर्य' कहलाते थे। आर्यों का धर्म वेदों पर आश्रित है और जिस देश में आर्य जाति का धर्म और संस्कृति मूलरुप में अधिकाधिक रुप से विद्यमान रहने और आज भी अत्यन्त भिन्न-भिन्न स्थिति में जहां आर्य संस्कृति के अधिकतम अवशेष विद्यमान हैं उस देश का नाम आर्यावर्त-भारतवर्ष है।

आर्यत्व वैदिक संस्कृति का पोषक है जैसा कि पूर्व में स्पष्ट किया गया है अर्थात् जिस संस्कृति का मूलाधार वेदों में है और जिसका पूर्ण विकास आर्यावर्त्त में हुआ है उसको अपनाने एवं प्रसारित करने में जो निष्ठा-विश्वास रखते हों एतदर्थ प्रयत्नशील रहते हों वेदाश्रित आर्य धर्म और आर्य संस्कृति के ऐसे श्रद्धालुओं पुरोधाओं की "शक्ति" तथा उपरोक्त के क्रम में एक अन्य शब्द प्रयोग किया गया है 'क्षात्र-धर्म' अर्थात् "क्षत्रियोचित् धर्म"। क्षात्र धर्म के निर्वहन में एक ऐसा संदेश निहित है जो शक्ति

का प्रयोग-धर्म के लिए करने की ओर इंगित करता है, किसी कुपंथ या मजहब की मान्यताओं को मनवाने या उत्पीड़ित करने के लिए नहीं। जो शक्ति दूसरों की सहायता के लिए प्रयोग में लायी जाये उसे ही धर्म कहा जा सकता है और जिस शक्ति का प्रयोग सेवा की भावना से रहित स्वार्थ-बुद्धि से किया जाये किसी प्रकार के उत्पीड़न के लिए किया जाये उसे पाशविक बल ही कहा जा सकता है, आर्यवीर दल में शक्ति और सेवा धर्म दोनों का समन्वय है। अतः आर्यवीर दल आर्य जाति की शक्ति का प्रतिनिधि संगठन है।

आर्यवीर दल का महत्व

आर्यसमाज वैदिक धर्म की प्रतिष्ठापना पर बल देता है और वेद का संदेश मंत्र-"**कृण्वन्तो विश्वमार्यम्**" वैदिक काल से अद्यतन काल तक इतिहास साक्षी है प्रगतिशील जातियों का विकास "बुद्धि" और "शक्ति" के बिना कभी सम्भव नहीं हुआ, बुद्धिबल से नियन्त्रित क्षात्रबल के बिना कहीं भी कोई उपलब्धि नहीं होती, व्यक्तिगत जीवन में भी अकेले मस्तिष्क की रक्षा में दो हाथ सदैव तत्पर रहते हैं अस्तु जिस जाति के लोग जितने अधिक निर्भय और बलवान होंगे वह जाति स्वभाव से उतनी अधिक शक्तिशाली और अपनी जाति रक्षा में उतनी ही अधिक समर्थ होगी। अतः आर्य जाति में ऐसे आदर्श-बल को तैयार कर आर्य संस्कृति-आर्य जाति और आर्य धर्म के गौरव को संसार में फैलना-रक्षा करना व उसको प्रतिष्ठापित करना आर्यवीर दल का मुख्य लक्ष्य है। आर्यों को संगठित बनाये रखना व उनकी रक्षा करना आर्यवीर दल का मुख्य लक्ष्य है। वैदिक विद्वान् श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति के शब्दों में "आर्यवीर दल का कार्य होगा कि वह अपनी शक्ति से आर्यत्व के प्रचारकों की ढाल बनें, जहां आर्य-धर्म खतरे में हो वहां अपनी जान की बाजी लगाये और आर्यत्व के आगे बढ़ाते हुए झण्डे को मजबूत हाथों से थामने के लिए तैयार रहे।"

आर्यवीरों का कार्य व आर्यवीर कैसे हों ? :

आर्य वीर दल आर्यत्व और क्षत्रियत्व दोनों गुणों का एक समन्वयात्मक संगठन है। उत्सवों-मेलों तथा सेवा करने के अन्य अवसरों पर जैसे बाढ़-दुर्घटना आदि में सदैव न केवल सहयोगी रहना वरन् अग्रणी बन प्रयत्नशील रहना उसका कर्म है। अतः आर्यवीरों को अपने रक्षा कार्य में सेवकों जैसा विनीत भाव और सेवा कार्य में सच्चे क्षत्रियों जैसी निर्भयता-दृढ़ता और "कार्यं वा साधयेयं" (कार्य को सिद्ध करेंगे या मर मिटेंगे) की भावना होनी चाहिए। रक्षा कार्य के लिए निडरता के साथ ही धीर-विनम्र-विवेकमान, मानसिक संयमशील, अवसर की परख करने की क्षमता वाला, क्रोध या व्यवहार से ऊपर उठकर अपने कर्त्तव्य का निर्धारण करने वाला होना चाहिए एतदर्थ आर्यवीरों में जिजिविषा, संगठन का महत्व, शारीरिक बल, चरित्र की दृढ़ता होना आवश्यक है झूठे आत्म-विश्वास एवं प्रमाद से मुक्त रहें, हिंसा एवं अहिंसा के यथार्थ तत्व के विवेचक हों अनुभवी वरिष्ठ योग्य व्यक्तियों द्वारा आर्यवीरों को सुदक्ष प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

डॉ. मुमुक्षु आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार

समस्त गुरुकुलों के विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि टंकारा में प्रतिवर्ष ऋषि बोधोत्सव पर पर "डॉ. मुमुक्षु आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार" उस विद्यार्थी को दिया जावेगा, जिसे योगदर्शन के समस्त १९५ सूत्र एवं यजुर्वेद के ४०वें अध्याय के सब मन्त्र शुद्ध उच्चारण व अर्थ सहित कंठस्थ होंगे। जो ब्रह्मचारी इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपना नाम अपने गुरुकुल के आचार्य के माध्यम से टंकारा गुरुकुल के आचार्य को शीघ्र भेज दें। प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले ब्रह्मचारी को पांच हजार रुपये नगद व स्मृति चिन्ह से पुरस्कृत किया जायेगा।

सम्पर्क सूत्र : श्री आचार्य रामदेव

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा

राजकोट - ३६३६५० गुजरात

दूरभाष नं. ०२८२२-२८७७५६

सामयिक

महर्षि दयानन्द के प्रेरक प्रसंग

- खुलहाल चन्द्र आर्य

महर्षि दयानन्द के जीवन के कुछ प्रेरणादायक प्रसंग निम्नलिखित है -

(१) मैं केवल शस्त्रार्थ करना ही नहीं जानता, शास्त्रार्थ करना भी जानता हूँ :- महर्षि जी अजमेर से कृष्णागढ़ पहुंचे। वहां के राजा वल्लभमल के अनुयायी थे। महर्षि जी ने जनभागवत का खण्डन आरम्भ किया तो राजा की त्यौरियां चढ़ गई। उन्होने उपद्रव कर महर्षि जी को कृष्णागढ़ से बाहर करने की योजना बनाई। महर्षि जी के पास भेजने के लिए कछ पंडित तैयार किये और उनके साथ एक उपद्रवी ठाकुर गोपाल सिंह को भेज दिया। धर्म चर्चा करना उनका उद्देश्य नहीं था। वे यह जानते थे कि महर्षि जी के अथाह ज्ञान सागर में उनके पैर नहीं टिक पायेगे। उनके हाव-भाव देखकर महर्षि जी को स्थिति समझने में देर न लगी। वे अपने आसन पर विराजमान हो गये। संक्षिप्त चर्चा के बाद आगुन्तकों ने योजानुसार हुल्लड़ आरम्भ कर दिया। महर्षि जी स्थिति से निपटने के लिये तैयार थे। वे अपने आसन पर तन कर खड़े हो गये और बोले - मैं केवल शस्त्रार्थ करना ही नहीं जानता, शस्त्रार्थ करना भी जानता हूँ।

(२) मैं राजमहलों में नहीं ठहरता हूँ :- महाराजा जयपुर को जब यह जानकारी मिली कि महर्षि जी जयपुर में पधारे हुए हैं तो उन्होने व्यास बक्सीराम और ठाकुर रणजीत को भेजकर प्रार्थना की कि महर्षि जी मेरा आतिथ्य स्वीकार कर राजमंदिर में निवास करें। यहां उनकी सुख-सुविधा में कोई त्रुटि न होने पायेगी। महाराजा जयपुर का निमन्त्रण महर्षि जी ने यह कह कर अस्वीकार कर दिया कि मैं राजमहलों में नहीं ठहरता हूं।

(३) मैं तो लोगों को बन्धन-मुक्त करने आया हूं, मेरे कारण कोई बन्धन में क्यों रहे :- महर्षि जी की बोलने की शैली से प्रबुद्ध लोग प्रभावित हुए बिना नहीं रहते थे। उनके श्रोताओं में हर वर्ग और सम्प्रदाय के लोग सम्मिलित होतेथे। इन्हीं श्रोताओं में वहां के तहसीलदार सैयद मुहम्मद नित्य ही महर्षि जी के उपदेश सुनने के लिए आते थे। वे महर्षि जी के भक्त हो गये थे। एक दिन उन्हें जानकारी मिली कि किसी धर्मान्ध ब्राह्मण ने पान में स्वामी जी को विष दे दिया है। उन्होंने उस ब्राह्मण की खोज की और उसे कारावास में डाल दिया। यद्यपि न्यौली क्रिया से महर्षि जी ने विष निकाल दिया था और वे पूर्णतः स्वस्थ हो गये थे। महर्षि जी को भी इस घटना की जानकारी मिल गई। अगले दिन जब तहसीलदार साहब महर्षि जी के समीप पहुंचे तो महर्षि जी ने उनसे कहा - "आपने एक व्यक्ति को कारावास में डाल दिया है। यह अच्छा नहीं किया।" तहसीलदार साहब ने विनम्र भाव से कहा - "उसने महाराज को विष देने का घोर अपराध किया है।"

महर्षि ने कहा - "यह तो ठीक है, परन्तु मैं तो लोगों को बन्धन-मुक्त कराने के लिए आया हूँ। मेरे कारण कोई बन्धन में क्यों रहे ?"

तहसीलदार सैयद मुहम्मद, महर्षि जी की उदार भावना से इतने प्रभावित हुए कि उन्होने जाते ही उस ब्राह्मण को मुक्त कर दिया।

(४) शीत निवारण में योग का प्रभाव व अभ्यास :- उतरने माह के शीत भरे दिन, हल्की पुखैया के शीतल झोंके, रात का दूसरा पहर और गंगा के किनारे की ठण्डी रेत, उस पर लंगोटी लगाए पद्मासनस्थ साधना-सिद्धि में संलग्न ऋषि दयानन्द, तभी बदायूं के कलेक्टर अपने एक पादरी मित्र के साथ आखेट के लिए उधार आ निकले। शरीर को कंपा देने वाले शीत में निर्वस्त्र साधु को ध्यान-

"दीपावली के उपलक्ष्य में"

दीपावली है अन्धकार पर प्रकाश की विजय का त्यौहार।
इसलिए छोड़ दो अन्धविश्वास, पाखण्ड जिनका नहीं हो कोई आधार॥
दीपावली है अन्याय पर, न्याय की विजय का त्यौहार।
मिटाते रहो अन्याय, स्थापित करो न्याय, यहीं है गीता का सार॥
दीपावली है अधर्म पर धर्म की विजय का त्यौहार।
अन्य मतो को छोड़, वैदिक धर्म को अपनाओ, जो देता है आत्मा को आहार॥
दीपावली है बेईमानी पर, ईमानदारी की विजय का त्यौहार।
जीवन में यदि उन्नत हो चाहो, तो करो ईमानदारी से व्यवहार॥
दीपावली है कूड़ा-कर्कट पर सफाई की विजय का त्यौहार।
कूड़ा-कर्कट से करो सदा नफरत और सफाई से करो हमेशा प्यार॥
दीपावली है हंसो और हंसाओ और सब को प्रसन्न करने का त्यौहार।
सब से करो अच्छा व्यवहार, मत करो किसी भी प्राणी पर अत्याचार॥
अधिकतर लोग समझते हैं, इसे रावण पर राम की विजय का त्यौहार।
जो भी हो इससे सीखें, कैसे अपने आवे मेरेजीवन में राम के संस्कार॥
दीपावली है त्यौहार, हमें सिखलाता, सबसे करना प्यार।
न कभी किसी पर जुल्म करें, न कभी कोई किसी से गलत व्यवहार॥
यदि करोगे हमेशा हर व्यक्ति से प्यार और रखोगो सबसे सद्व्यवहार।
तभी हम कह सकेंगे, मनाया सभी अर्थों में दीपावली का त्यौहार॥
दीपावली है बुराईयों को छोड़, अच्छाईयों को अपनाने का त्यौहार।
कहता "खुशहाल" इस सिद्धान्त को तो अपने जीवन पर उतार॥

मग्न देखा को उनके भव्य मुख मण्डल को वे उस समय तक निहारते रहे, जिस समय तक ऋषि जी का ध्यान भंग न हुआ। आँख खुलते ही विनम्र भाव से उन्होंने महर्षि जी को अभिनन्दन किया और बोले- "इस हाड़ कंपा देने वाली शीत-रात्रि में आप बिना वस्त्र अचल बैठे अपने ध्यान में मग्न हैं, जबकि हम लोग ऊनी वस्त्र पहनने के पश्चात् भी ठण्ड से अपने शरीर में कम्पन अनुभव कर रहे हैं। आपको शीत भरे मौसम में भी ठण्ड नहीं सताती, इसका कारण हमें समझाइये।"

महर्षि जी मुस्कुराए और उनसे कहा - "योग का प्रभाव और शरीर का अभ्यास ही इसका कारण है। इस प्रकार आपके इस शीत में भी गर्म वस्त्रों से अपना मुख नहीं ढांपा, फिर भी उसे ठण्ड नहीं लगती। इसलिए कि मुख को शीत सहने का अभ्यास हो गया है, इसी प्रकार मेरे पूरे शरीर से शीत सहने का अभ्यास हो गया है।" (धन्य है महर्षि जी की निरभिमानता, यदि दूसरा कोई होता तो अपने योग-बल की बड़ी प्रशंसा करता)

(५) यह रोटी नाई की नहीं, गेहूँ की है :- कुछ समय के पश्चात् महर्षि जी अनूपशहर (बुलन्दशहर) आ विराजे। वे छुआछूत और जाति-पांति के विरोधी थे। उनका दयालु हृदय सभी को समभाव से देखता था। अनूपशहर का उमेदा नाई महर्षि जी का भक्त हो गया था। महर्षि जी का यह नियम था कि जो भक्त श्रद्धाभाव से प्रथम भोजन उनकी सेवा में ले आये, वे उसे ही ग्रहण कर लेते थे। एक दिन उमेदा के मन में भी महराज श्री को भोजन कराने की इच्छा हुई। प्रीतिपूर्वक अपनी गृहिणी से भोजन बनवाकर श्री चरणों में उपस्थित हुआ और भोजन कर लेने की प्रार्थना की। महर्षि जी ने शान्त भाव से भोजन करना आरम्भ कर दिया। उस समय महर्षि जी के समीप कुछ ब्राह्मण भी धर्म चर्चा का आनन्द ले रहे थे। उन्होंने आश्चर्य से महर्षि जी की ओर देखकर कहा -"महर्षि जी, आप क्या कर रहे हैं? यह तो नाई है। आप नाई की रोटियाँ खा रहे हो।"

महर्षि जी ने उनको बिना देखे उत्तर दिया - "नहीं, मैं नाई की रोटियां नहीं खा रहा हूँ। मैं तो गेहूं की रोटियाँ खा रहा हूँ।"

(६) सत्यासत्य जानते हैं , पर मानते नहीं :- इन दिनों पं. हेमचन्द्र, महर्षि जी से आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन कर रहे थे। महर्षि जी के प्रति उनके हृदय में अगाध श्रद्धा थी। एक दिन जिज्ञासावश उन्होने महर्षि जी से प्रश्न किया - "स्वामी जी, बहुत से विद्वान् आपसे शास्त्रार्थ करने आते हैं। क्या वे सभी सत्यासत्य का निर्णय करने में असमर्थ है ?"

महर्षि जी हंस पड़े। बोले - वे लोग सत्यासत्य को जानते हैं, परन्तु मानते नहीं है। मान लेने से उन्हें अपना धन्धा चौपट हो जाने का भय है। जो मान लेते हैं, वे उसके प्रचार में लग जाते हैं।

यह लेख समझदार व्यक्तियों के लिए लाभदायक हैं। इसको पढ़ने के बाद मुझे विश्वास है कि काफी लोग वैदिक धर्म के प्रति आकर्षित होंगे।

पता - गोविन्दराम आर्य एण्ड संस, १८०, महात्मा गांधी रोड, (दो तल्ला) कोलकाता-७०००००७

एतद् त्रयं प्रसरति

वार्त्ता च कौतुकवती विमला च विद्या, लोकोत्तरं परिमलश्च कुरङ्गनाभेः।
तैलस्य बिन्दुरिव वारिणि दुर्निवार-मेतद् त्रयं प्रसरति स्वयमेव भूमौ ।। (माघ)

भावार्थ - दुनियाँ बड़ी अजीब है। जन-समाज के सामने कोई भी बात बिना पहुंचे नहीं रहती। चाहे अच्छी हो या बुरी? पहुंच अवश्य जाती है। महाकवि माघ ने कितने सुन्दर शब्दों में इसका चित्र खींचा है - कोई भी कौतुकमयी चर्चा हो (जैसे किसी के घर में एक साथ दो बच्चे जन्में हों, किसी व्यापारी का दिवाला निकल गया हो) चाहे वह लाख छिपाने का प्रयत्न आप कीजिए छिप नहीं सकती। इसी तरह विद्या का है कि - यदि मनुष्य के पास सच में ही श्रेष्ठ विद्या है, ज्ञान है, कोई चाहे या न चाहे अथवा लाख बार उसके ज्ञान पर पर्दा डालना चाहे परन्तु वह तो फैलेगा ही। विद्या तो सूर्य के प्रकाश की तरह है क्या संसार का कोई भी अन्धकार प्रचण्ड रवि की रश्मियों को छू सकता है ? कदापि नहीं। यही दशा कस्तूरी की है। कस्तूरी की अद्वितीय लोकोत्तर सौरभ, सुगन्ध क्या कभी रुक सकती है ? वह तो फैलेगी ही। आप चाहें कहीं उसे क्यों न रख दें ? वह तो अपना गुण बिना किसी के कहे ही बताएगी। किसी को यह कहने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी कि यह कस्तूरी है। कवि माघ कहते हैं कि - जिस प्रकार जल में तैल की बूंद स्वयमेव फैलती है, उसे रोकने का सामर्थ्य किसी में नहीं है, तथैव उपर्युक्त तीनों वस्तुएँ स्वतः ही फैलती हैं। इनके विज्ञापन अथवा प्रचार की किसी को आवश्यकता नहीं है।

- सुभाषित सौरभ

ओ३म् असतो मा सद् गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमृतं गमय।

हे भगवन्, आप मुझे असत्य मार्ग से हटाकर सन्मार्ग में प्रवृत्त करें। अज्ञानरुपी अंधकार से दूर कर ज्ञान-ज्योति की ओर ले जाएँ। मृत्यु से दूर कर अमृत-पथ की ओर ले चलें।

प्रासंगिक

क्या रावण का वध विजयादशमी को हुआ था ?

सम्पूर्ण भारतवर्ष में आश्विन शुक्ल दशमी को समारोह पूर्वक मनाया जाने वाला विजया-दशमी पर्व का अपना एक अलग एवं विशिष्ट महत्व है। इस अवसर पर देश के कोने-कोने में दस दिन पहले से ही विशेष चहल-पहल नगर गांव एवं गली-गली में देखी जा सकती है। समय-समय पर मनाये जाने वाले पर्व हमें वास्तव में प्रेम तथा सहअस्तित्व का सुनहरा संदेश प्रदान करते हैं। साथ ही जहां हमें आनन्द एवं उत्साह से सराबोर कर देते हैं, वहां हमारे जीवन स्तर को भी उत्कृष्ट करने में सहयोग करते हैं। सादगी एवं उच्चभावनाओं के प्रेरक इन पर्वों में इस समय अनेक अशोभनीय परिपाटियां पनपने लगी है।

दुःख का विषय तो यह है कि इन नाना प्रकार के कुप्रथाओं से पर्व का जो सही स्वरुप है, वह विकृत हो जाता है जब उनकी वास्तविकता सामने उपस्थापित की जाती है तो लोगों को विश्वास नहीं होता कि विशुद्ध रुप कौन सा है ? इसी प्रकार विजयादशमी जिसे कि दशहरा के रुप में हम धूमधूम से मनाते हैं। इसमें भी एक भयंकर भ्रांति है क्या रावण का वध विजया-दशमी को हुआ था ? यह वस्तुतः विचारणीय है। क्योंकि इसी मान्यता के तहत इस दिन रावण का पुतला बनाकर जलाया जाता है। आइये देखें कि इसके बारे में राम-रावण कालीन महर्षि बाल्मीकि जी क्या कहते है ?

चैत्रः श्रीमानयं मासः पुण्यपुष्पित काननः ।
यौवराज्याय रामस्य सर्वमेवोपकल्प्यताम् ॥

अयो. ३/४२

अर्थात् - इस श्रेष्ठ और पवित्र चैत्र मास में जिसमें वन पुष्पों से सुशोभित हो रहे हैं, अतः श्रीराम के राज्याभिषेक की तैयारी करो महर्षि वशिष्ठ के इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि राम का राज्याभिषेक चैत्र मास में होना था, परन्तु कैकेयी की वजह से राज्य सिंहासन के स्थान पर दूसरे ही दिन श्रीराम को वन जाना पड़ा चूंकि राम चैत्र मास में वन गये थे, इसलिये चैत्र में ही चौदहवाँ वर्ष पूर्ण होना चाहिए, आश्विन मास में नहीं। विजयादशमी के दिन राम ने रावण पर विजय नहीं पायी थी, प्रत्युत विजय यात्रा आरम्भ की थी, रावण का वध भी चैत्र मास में किया गया। देखिये जिस समय रावण अपने पुत्र इन्द्रजीत के वध से दुःखी होकर सीता को मारने के लिये उद्यत हुआ तब उसे रोकते हुए सुपार्श्व ने कहा था-

अभ्युत्थानं त्वमद्येव कृष्णपक्ष चतुर्दशी ।
कृत्वा निर्याममावस्यां विजयाय बलैर्वृतः ॥ (यु.५०)

अर्थात् - आज कृष्णपक्ष चतुर्दशी है, आप युद्ध की तैयारी कीजिये, और कल अमावस्या को सेना सहित विजयार्थ प्रस्थान करिये। अब जब रावण का वध हो चुका था, विभीषण को राजगद्दी देकर श्रीरामचन्द्र ने अयोध्या लौटने की इच्छा प्रकट की विभीषण ने कहा आप कुछ दिन यहीं लंका में विश्राम कर मुझे सेवा का अवसर प्रदान कर अनुगृहीत करें - राम ने कहा - उधर भारत मेरी प्रतीक्षा में दिन गिन रहा है अब मै बिलकुल नहीं ठहर सकता, अब तो आप कोई ऐसा उपाय कीजिये जिससे मैं शीघ्र अयोध्या पहुंच जाऊँ- विभीषण जी कहते हैं - **अह्ना त्वां प्रापयिष्यामि तां पुरीं पार्थिवात्मज । पुष्पकं नाम भद्रं ते विमानं सूर्य सन्निभम् ॥** अर्थात् - सूर्य के समान देदीप्यमान पुष्पक विमान में मैं एक ही दिन में अयोध्या पहुंचा दूँगा। युद्ध काण्ड के ७०वें सर्ग के प्रथम श्लोक के अनुसार -

पूर्णे चतुर्दशे वर्षे, पञ्चम्यां लक्ष्मणाग्रजः ।
भरद्वाजाश्रमं प्राप्य ववन्दे नियतो मुनिम् ॥

अर्थात् - चौदहवें वर्ष के पञ्चमी के दिन याने कि चैत्र शुक्ल पञ्चमी के दिन भरद्वाज के आश्रम पहुंचकर श्रीरामचन्द्र जी ने मुनि को प्रणाम किया। भरद्वाज का आश्रम प्रयाग में अयोध्या के एकदम सन्निकट अवस्थित था। इस प्रकार इन उपरोक्त प्रमाणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि विजयादशमी के साथ रावणवध का दूर का भी रिश्ता नहीं है। यह बेसिर पैर की बात कालान्तर में जोड़कर गुमराह

करने का असफल प्रयास किया गया है। आइये एक नजर विजयादशमी की पुरानी परम्परा पर डालें पुराने जमाने में आश्विन शुक्ल दशमी से पहले बरसात का चारमाह चातुर्मास्य होता था जिसमें आबाल वृद्ध वनिता सब स्वाध्याय करते थे, काफी दिनों में अस्त्र शस्त्रों के प्रयोग न होने से उनमें जंग आयी होती थी, उसको साफकर विजयादशमी के दिन परीक्षण करते थे, फिर युद्ध यात्रा के लिये निकलने से पूर्व सब आपस में गले मिलते थे, प्रेमपूर्वक अपने बन्धुओं से अंतिम मिलन करके जाते थे क्या पता फिर मुलाकात हो या नहीं। इस प्रकार वास्तव में प्रेम प्रसार का पर्व है यह विजयादशमी।

- सम्पादक

विडम्बना

"रक्तचूसक"

- देवेन्द्र कुमार मिश्रा

तुम्हारे ये महल कैसे बने हैं
ये तुम जानते हो
कितने गरीबों की लाशें,
कितनों की खून-पसीने की कमाई
लगी है इन विशाल अट्टालिकाओं में
ये तुम अच्छी तरह से जानते हो
तुमने गरीब और अमीर के बीच
जमीन आसमान का अन्तर कर दिया
खाई होती तो भर सकते थे
लेकिन जमीन-आसमान
को कौन मिला सकता है
मैं ये नहीं कहता कि तुम खूनी हो
लेकिन ये तुम जानते हो
कि तुम क्या हो
कानूनी तरीकों से लूटा हैं तुमने
जो किया नियम कानून की आड़ में
लोगों को सुख-सुविधाओं के नशे से
भरपूज इंजेक्शन दिये हैं तुमने
धीरे-धीरे लोगों की जेबे इस
तरह खाली की और कह रहे हो
कि उन्होंने अपना दिमाग गिरवी
रखा दिया तुम्हारे कदमों में
रक्तचूसक हो तुम और बढ़ाते हो गरीबी
रक्तबीच की तरह
और अपनी अमीरी में
नये-नये प्रलोभनों से
वृद्धि करते रहते हो सतत्
हाँ तुम अपराधी नहीं
व्यापारी हो। मनुष्यों का
रक्तचूसने वाले चालाक मनुष्य
जब-जब तुम्हारी अमीरी बढ़ती है
गरीब और गरीब होता जाता है
लोग तुम्हें उद्योगपति कहते हैं
लेकिन हो तुम मनुष्यता के लिए घातक
इसलिए तुमने अपनी सुरक्षा में न जाने
कितने गरीबों की भर्ती कर रखा है
साथ में खूंखार कुत्तों को
इतना डर तो उन्हीं में होता है
जो ये जानते है कि अमीरी बढ़ी किस तरह
ये शानो-शौकत
ये महल-अट्टालिकायें बनीं कैसे ?
गरीब के शरीर के अन्दरुनी
हिस्सों में घुसकर
जिसका उन्हें पता भी नहीं
तुम धीरे-धीरे चूस रहे हो
उनका रक्त
और तुम्हें देखकर गरीब कह रहे हैं
लक्ष्मी की कृपा है इन पर
बेचारे नासमझ।

पता : पाटनी कालोनी, भरतनगर, चन्दनगांव छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

ज्वलन्त दोनों वक्त पेट भरना जरूरी

- अनुज गुप्त

> ***पैसे लेकर दें या मुफ्त-असल बात यह है कि सभी भारतीय दोनों वक्त भरपेट खाकर सोएं। क्या अतिरिक्त अनाज के सहारे देशभर में भंडारा चलाकर गरीबों का पेट नहीं भरा जा सकता ? बेईमानों से भरे पड़े देश में कुछ तो ईमानदार होंगे जो इस योजना को ठीक-ठाक तरीके से चला सकें।***

सुप्रीम कोर्ट की ठुकाई के बाद भी केन्द्र सरकार ने गोदामों के भीतर व बाहर सड़ रहे अनाज को गरीबों में मुफ्त बांटने की बजाए बीपीएल दरों पर २५ लाख टन अनाज राज्यों को देने का निर्णय लिया है पैसे लेकर दें या मुफ्त-असल बात यह है कि सभी भारतीय दोनों वक्त भरपेट खाकर सोएं, क्या अतिरिक्त अनाज के सहारे देशभर में भंडारा चलाकर गरीबों का पेट नहीं भरा जा सकता ? बेईमानों से भरे पड़े देश में कुछ तो ईमानदार होंगे जो इस योजना को ठीक-ठाक तरीके से चला सकें।

बहुत विषम स्थिति है - अनाज से सरकारी गोदाम इस कदर अटे पड़े हैं कि रखने की जगह न होने के कारण कारण लाखों टन खुले में पड़ा सड़ता रहता है तो दूसरी ओर करोड़ों लोग भरपेट खाना नहीं खा पाते है। इन परिस्थितियों को देखते हुए ही सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि गरीबों में आज मुफ्ट बांट दिया जाए, केन्द्रीय कृषि मंत्री शरद पवार कह बैठे कि 'वह' अदालत की सलाह थी 'निर्देश' नहीं यह पढ़ने के बाद अदालत ने कह दिया कि उसने निर्देश दिया था इसके बावजूद यदि केन्द्रीय मंत्रिमंडल की उच्चाधिकार प्राप्त समिति ने मुफ्त अनाज बांटने की बजाए गरीबी रेखा से नीचे वालों के लिए लागू कीमत पर अनाज देने का निर्णय लिया है तो यही कहा जा सकता है कि कार्यपालिका को इस तरह के अंतिम निर्णय लेने का पूरा अधिकार है और यदि न्यायपालिका को अपने कार्यों में हस्तक्षेप करने से चाहे तो रोक सकता है।

लेकिन विषय केवर इतना भर नहीं है कि धार्मिक उदारता और दान की परम्परा वाले इस देश में भंडारा कराने की परिपाटी रही है। देश ने आजादी के बाद काफी तरक्की की है, लेकिन लगातार बढ़ती आबादी ने अभी भी करोड़ों लोगों को वंचितों की श्रेणी में रखा हुआ है। यदि कहा जाए कि ३० से ३५ करोड़ लोग इस श्रेणी में आते हैं तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। इतनी बड़ी आबादी का भूखे या आधे पेट रहना क्या किसी भी सभ्य समाज को स्वीकार्य होना चाहिए ? स्वीकार्य यदि हो तो भी क्या देश व समाज की स्थिरता और सुरक्षा के लिए यह बहुत बड़ी चुनौती नहीं है ? केन्द्र सरकार इस समय खाद्य सुरक्षा विधेयक को तैयार करने की प्रक्रिया से गुजर रही है। राष्ट्रीय सलाहकार परिषद के तमाम धुरंधर भी पूरा दिमाग लगा रहे हैं। लेकिन क्या पके-पकाए भोजन को बांटने यानि अखंड भंडारा चलाने पर कोई विचार नहीं किया जा सकता ? सदियों तक गांव के मंदिर न केवल पाठशाला या चौपाल के लिए इस्तेमाल होते रहे हैं, बल्कि वहां बंटने वाले प्रसाद का भी कईयों को हमेशा सहारा रहा है, धर्म-कर्म और दान को अपने जीवन का अभिन्न अंग मानकर चलते रहे भारतीय अब अपने दिखावे के लिए तो शायद यह अधिक कर रहे हैं, । लेकिन बेसहारों को स्थायी मदद का विचार कम कर रहे हैं।

देश के कुछ हिस्से ही ऐसे होंगे जहां औसत सम्पन्नता ठीक-ठाक रहने के कारण भंडारे के सहारे बैठने वाले लोग कम होंगे, लेकिन पूरा हिंदी भारत, पूर्वी भारत और यहां तक कि महाराष्ट्र व आंध्रप्रदेश के काफी बड़े इलाके में इसका स्वागत करने वाले मिल जाएंगे। लगभग सभी जिलों में ऐसे धार्मिक व सामाजिक संगठन अवश्य ही होंगे जो वास्तव में दरिद्रनारायण की सेवा करना अपना मानव धर्म समझते हैं और काफी हद तक ईमानदारी से अपनी जेब का पैसा लगाकर काम भी करते हैं। यदि इनकी

मदद लेकर पंचायतों के स्तर पर भंडारा प्रणाली को प्रारंभ किया जाए तो शायद ठीक-ठाक सफलता मिल भी जाए, सस्ता अनाज देने की प्रणाली में भ्रष्टाचार भी काफी पाया जाता है। खरीदने के साथ ही बेच देने वालों की भी कमी नहीं रहती, ऐसे में यदि पका हुआ भोजन परोसने की प्रथा प्रारंभ की जाए तो कम से कम वांछित लोगों का पेट तो भरेगा, जिसे भूख लगी होगी वह अवश्य ही खाने के लिए आएगा, स्कूलों में मध्याह्न भोजन की प्रणाली से मिले सबकों से लाभ लेकर इसे चलाया जा सकता है। कोई कह सकता है कि मुफ्त खिलाने से लोगों में मुफ्तखोरी की आदत पड़ जाएगी उस पर इतना भर ध्यान रखा जाना चाहिए कि करोड़ों लोग पहले से ही ऐसा कर रहे हैं उसमें संख्या कुछ बढ़ भी गई तो कोई खास फर्क नहीं पड़ेगा लेकिन हाँ ! वैभवशाली होते जा रहे देश में भूखे पेट का दाग तो नहीं बचेगा, वैसे इस काम में केवल सरकारी अनाज ही क्यों, दान देने वालों की भी मदद ली जा सकती है। केवल इतना ही क्यों ? यदि सम्पन्न परिवारों से उनके लिए बेकार पड़े कपड़े, बर्तन, जूते या अन्य वस्तुएं भी ठीक-ठाक करके गरीबों में बंटवाने की पुख्ता व्यवस्था कर ली जाय तो न केवल मानवता का, बल्कि देश का भी काफी भला होगा, जिनके पास नहीं है, उनका काम चल जाएगा, वस्तुओं का भरपूर दोहन हो जाएगा, अमीरों की अलमारियां खाली हो जाएगी जिससे उन्हें कुछ नये खरीदने का मौका मिल जाएगा तो इस नई खरीदी से बाजार में रौनक आएगी। बाजार में बढ़ने वाली खरीददारी पूरी अर्थव्यवस्था को नई गति देगी जिससे रोजगार के साधन व अवसर बढ़ेगे। सरकार एक बार इस दिशा में सोचकर तो

देखे। इस काम में वह सरकारी तंत्र की बजाए गैरसरकारी तंत्र का अधिक प्रयोग करे तो बेहतर होगा क्योंकि सरकारी अफसरशाही के वेतन का बोझ ही काफी हो जाएगा चाहे तो राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं, दलों व उसके तमाम मोर्चों-संगठनों का भी इस काम में प्रयोग किया जा सकता है। लोगों को भी सोचना चाहिए कि हर काम में भ्रष्टाचार और लूट-खसोट करने की प्रवृत्ति रखी जाएगी तो दरिद्र नारायण की यह सेवा कैसे हो जाएगी ? डायन भी तो एक घर छोड़कर चलती है - फिर भ्रष्टाचार कर पाने में सक्षम ताकतकार भारतीयों का हुजूम तो उनसे अच्छा ही होगा।

श्रेष्ठ कर्म

यज्ञ जीवन का हमारे श्रेष्ठ सुंदर कर्म है।
यज्ञ का करना कराना, आर्यों का धर्म है ॥१॥
यज्ञ से दिशि हो सुंगधित, शांत हो वातावरण।
यज्ञ से सद्ज्ञान होवे यज्ञ से शुद्धाचरण ॥२॥
यज्ञ से हो स्वस्थ काया, व्याधियां सब नष्ट हों।
यज्ञ से सुख संपदा हो, कष्ट सारे नष्ट हों ॥३॥
यज्ञ से दुष्काल मिटते, यज्ञ से जल वृष्टि हो।
यज्ञ से धनधान्य हो, हर भांति सुखमय सृष्टि हो ॥४॥
यज्ञ है प्रिय मोक्षदाता, यज्ञ शक्ति अनूप है।
यज्ञमय यह विश्व है, विश्वेश यज्ञ स्वरुप है ॥५॥
यज्ञमय अखिलेश ऐसी आप अनुकंपा करें।
यज्ञ के प्रति आर्य जनता में अमिट श्रद्धा भरें ॥६॥
यज्ञ पुण्य प्रताप से सब पाप ताप तिमिर हरें।
यज्ञ नौका से अभय संसार सागर को तरें ॥७॥

"दयानन्द के बेटे"

- रोहित आर्य,

वेद ज्ञान लेकर के दिल में, हम तूफान समेटे हैं,
हमें गर्व कहने में है हम, दयानन्द के बेटे हैं ॥
हमने किया है काम राष्ट्र जागरण का ही,
सारे जनमानस को हमने जगाया है ।
ढोंग व पाखण्ड वाली, बेल है उखाड़ डाली,
मुल्ले-मौलवियों का घमण्ड भी मिटाया है ।
करके प्रहार सारी ही बुराईयों पै सुनो,
देश के सुधार का भी बिगुल बजाया है ।
जिसने अपनाकर के ईश्वर को पा सकोगे,
दुनियां को वेद पथ हमने दिखाया है ॥१॥
हमने उन्हें बचाया है जो, मझधारों में लेटे हैं
हमें गर्व कहने में है हम, दयानन्द के बेटे हैं ।
जाति-पाति का मिटाया हमने सदा ही भेद,
बिछड़ों को हमने ही सीने से लगाया है ।
हो गये विधर्मी हमारे जो थे हिन्दु भाई,
वापस ले आये उन्हें आर्य बनाया है ।
बाल ब्याह, सती प्रथा बन्द करवाये और,
अधिकार नारियों को शिक्षा का दिलाया है ।
ढोंग व आडम्बरों के जाल से निकाल कर,
यज्ञ करना-कराना हमने सिखाया है ॥२॥
संस्कृति की रक्षा खातिर, हम विष भी पी लेते हैं ।
हमें गर्व कहने में है हम, दयानन्द के बेटे हैं ॥
राष्ट्र अस्मिता के लिये हम लड़ते रहे हैं,
पाने को स्वतन्त्रता को दिया निज खून है ।
पढ़कर के सत्यार्थ पाया हमने प्रकाश,
फाँसी चढ़ने का आया जिससे जुनून है ।
स्वामी दयानन्द जी से पाकर के प्रेरणा को,
सर्दी न देखी नहीं देखा मई-जून है ।
बनकर बिस्मिल, शेखर, भगतसिंह,
नींव अंगरेज दिये गोलियों से भून है ॥३॥
भारत माता की खातिर हम, फाँसी पर चढ़ लेते हैं ।
हमें गर्व कहने में है हम, दयानन्द के बेटे हैं ॥

माता भारती का मान वापस दिलाने हेतु,
आर्य समाजियों ने योगदान दिया था ।
गऊ वध का विरोध हमने किया था और,
आगे बढ़ हमने ही बलिदान किया था ।
हिन्दी आन्दोलन में भी हम ही सदा लड़े थे,
तन-मन-धन का हमीं ने दान किया था ।
हैदराबाद की रियासत मिलाने को भी,
आर्यों ने जाकर के सीना तान दिया था ॥४॥
लहू बहाकर देश की खातिर, त्याग स्वयं का देते हैं ।
हमें गर्व कहने में है हम, दयानन्द के बेटे हैं ॥

गुरुकुल वाली शिक्षा फिर से चलाई और,
वेदों का किया प्रचार सारे ही जहान में ।
संस्कृत भाषा फिर पढ़ व पढ़ाकर के,
दिया है बढ़ावा संस्कृति के सम्मान में ।
शास्त्र और उपनिषदों को पढ़ने लगे हैं,
हमने लगाया चित्त ईश्वर के ध्यान में ।
प्यारे देश भारत को एक करने के लिए,
हिन्दी का प्रसार किया सारे हिन्दुस्तान में ॥५॥
ऋषि मुनियों की परिपाटी, हम दिल में आज समेटे हैं ।
हमें गर्व कहने में है हम, दयानन्द के बेटे हैं ॥

आर्यों समूचा देश तुमको पुकारता है,
इस राष्ट्र को हमेशा तुम ही बचाओगे ।
ऋषि दयानन्द के दिखयें रास्ते पै चल,
ढोंग व आडम्बरों से तुम ही बचाओगे ।
पोप और मुल्लाओं के जाल से निकाल कर,
मुक्ति पथ दुनियां को तुम ही दिखाओगे ।
कृण्वन्त विश्वमार्यम् अब गूंजेगा तो,
सच्चे पूत ऋषि दयानन्द के कहाओगे ॥६॥
"रोहित" तुम हो वो नाविक, जो देश की नैय्या खेते हैं ।
हमें गर्व कहने में है हम, दयानन्द के बेटे हैं ॥

पता - आर्यसमाज मिंटो रोड, डीडीयू मार्ग, बीजेपी आफिस के सामने, नई दिल्ली-०२, मोबा. ८९५८६८२४८९

प्रेरणा

पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा

५ अक्टूबर जयन्ती

- डॉ. भवानीलाल भारतीय

"भारत को स्वतन्त्र कराने के लिए यदि बल प्रयोग करने की भी आवश्यकता हो तो ऐसा करने में हमें संकोच नहीं करना चाहिए ।" इस महत्वपूर्ण उक्ति को क्रियात्मक रूप में चरितार्थ करने की प्रेरणा देने वाले सशस्त्र क्रान्ति के आद्य प्रवर्तक पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा के विषय में हमारे देशवासियों को जानकारी बहुत कम है । इसका कारण तो यह है कि श्यामजी अपने जीवन के अन्तिम ३३ वर्ष इंग्लैण्ड तथा स्विट्जरलैण्ड में ही व्यतीत किये और उनकी मृत्यु भी विदेश की धरती पर ही हुई । अतः यहां के लोग उनके विचारों, धारणों एवं कार्यों के सम्बन्ध में बहुत कम जान पाये । एक अन्य कारण यह भी रहा कि श्यामजी का राजनैतिक जीवन सैद्धान्तिक अधिक रहा, व्यावहारिक कम । उन्होंने जिन सिद्धान्तों का निरूपण किया उन पर चलने के लिए अन्यों को तो प्रेरित तथा प्रोत्साहित किया, किन्तु स्वयं एक सिद्धान्त-स्थापक आचार्य के रूप में ही रहे । तथापि, यह स्वीकर करना ही होगा कि वीर सावरकर, लाला हरदयाल, मदनलाल धींगरा तथा अनेक क्रान्तिकारियों द्वारा किये गये वीरतापूर्ण कृत्यों के पीछे श्यामजी की अदम्य प्रेरणा कार्य कर रही थी ।

यहां प्रश्न होता है कि श्यामजी की देशभक्ति तथा स्वतन्त्रता के प्रति उनकी अदम्य इच्छा के पीछे कौन-सी प्रेरणाएँ कार्यरत थीं ? जैसा कि हम उनके जीवन चरित्र में देखते हैं, वे अपनी युवावस्था में ही स्वामी दयानन्द के सम्पर्क में आये थे । स्वामी जी से उन्होंने एक ओर तो संस्कृत का अद्वितीय एवं अप्रतिम ज्ञान प्राप्त किया तो दूसरी ओर स्वदेशनिष्ठा के दिव्य भावों को भी उनसे ही ग्रहण किया । स्वामी जी के प्रति उनका सम्मानभाव जीवन-पर्यन्त यथावत् रहा और वे अत्यन्त कृतज्ञतापूर्वक उनका स्मरण करते थे । इसी प्रकार इंग्लैण्ड में रहकर अध्ययन करते समय, तथा बाद में स्थायी रूप में वही बस जने पर, वे यूरोप के महान् चिन्तकों और दार्शनिकों के उदार विचारों से भी प्रेरणा ग्रहण करते रहे । मिल और स्पैन्सर के विचारों का उन पर अमिट प्रभाव था ।

श्यामजी के जीवनीकारों को ध्यान करके जीवन के अन्य पहलू की ओर भी गया है । धन के प्रति उनका प्रबल आकर्षण, वित्तोपार्जन की उनकी अदम्य लालसा तथा सांसारिक सुख-सुविधापूर्ण जीवनयापन की प्रबल इच्छा, क्या उन्हें उन क्रान्तिकारियों के गुरु या अनुशास्ता का पद ग्रहण करने का अधिकार देती है जिन्होंने देश की स्वन्तत्रता के लिए तिल-तिल कर अपनी आहुति दी थी तथा स्वाधीनता-यज्ञ में सर्वस्व होम दिया था ? निश्चय ही श्यामजी का जीवन तिलक, अरविन्द और लाजपतराय के सक्रिय राजनैतिक जीवन से तो भिन्न है ही, वे सावरकर, भगतसिंह तथा बिस्मिल जैसे उन क्रान्तिकारियों की कोटि में भी नहीं आते जिन्होंने अपने घर-परिवार, यहां तक कि शरीर को भी मातृभूमि के कष्टों का निवारण करने के लिए समर्पित कर दिया था । तथापि, श्यामजी का भारत की सशस्त्र क्रान्ति-चेष्टा का पितामह कहना अत्युक्ति नहीं है । वे ही प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने हर्बर्ट स्पैन्सर के शब्दों को उद्धृत करते हुए सर्वप्रथम कहा था - "अत्याचार का प्रतिकार करना न्यायोचित ही नहीं, अपितु आवश्यक भी है । अत्याचारों का अप्रतिकार लोकहित के साथ-साथ स्वाभिमान का भी विघातक है ।" जहां तक एक ओर उन्होंने विदेशी सत्ता को हटाने के लिए बल-प्रयोग तथा शस्त्र ग्रहण करने के औचित्य को स्वीकार किया, दूसरी ओर यह भी कहा कि यदि हम विदेशी शासन के साथ सब प्रकार का असहयोग करें तो इसका एक दिन टिका रहना भी असम्भव हो जायेगा । इस प्रकार श्यामजी ने ही महात्मा गांधी से पूर्व असहयोग, असहकार, सत्याग्रह तथा सविनय अवज्ञा आदि की धारणाओं को प्रकट किया था ।

पता - श्री गंगानगर, राजस्थान

आरोग्य जगत्

होमियोपैथी से कब्ज का उपचार

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी
(होमियोपैथिक चिकित्सक)
मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

कब्ज कान्सटीपेशन आधुनिक मनुष्य का रोग है। कुछ भी कभी भी खा लेने की आदत के चलते आज कब्ज से लगभग सभी लोग पीड़ित है। कब्ज आंते कमजोर और दुर्गन्धयुक्त हो जाती है। जिससे अधिक समय तक कब्ज रहने से पेनक्रियाज, किडनी और मूत्रालय पर गंभीर असर डालती है।

कब्ज आमाशय की स्वाभाविक परिवर्तन की अवस्था है, जिसमें मल निष्कासन की मात्रा कम हो जाती है। मल क्रिया में कठिनाई होती है, मल कड़ा हो जाता है, इसकी आवृत्ति घट जाती है या मल निष्कन के समय अधिक बल का प्रयोग करना पड़ता है और पेट में गैस बनती है।

कब्ज एक प्रकार का ऐसा रोग है, जो पाचनशक्ति के कार्य में किसी बाधा उत्पन्न होने के कारण होता है। इस रोग के कारण पेट में कई रोग उत्पन्न हो जाते हैं। इस रोग के कारण शरीर में कार्य करने की क्षमता कम हो जाती है।

कारण :- कम रेशायुक्त भोजन का सेवन करना, शरीर में पानी का मात्रा कम होना, कम चलना या कम कार्य करना, बड़ी आंत में घाव या चोट लगने के कारण, बड़ई आंत में कैन्सर, थायरायड हार्मोन का कम बनना, कैल्सियम और पोटेशियम की कम मात्रा, मधुमेह रोगियो में पाचन संबंधी समस्या कंपवाद (पार्किसन बीमारी) मानसिक तनाव, अनियमित भोजन करते रहना, मद्यपान कब्ज रहने से सभी गंभीर बिमारियों का मूल कारण बन जाता है।

होने वाली बीमारी :- इससे वायु प्रकोप या रक्त विकार होता है, सिरदर्द, अनिद्रा, चक्कर और भूख न लगने की शिकायत भी रहती है। बड़ी आंत में मल जमा होने से उसमें सड़ांध लग जाती है, जिसमें आंतों में सूजन और दांतों में सड़न लग जाती है। मसूठों में कमजोरी आने लगती है। पैनक्रियाज, किडनी और मूत्राशय पर गंभीर असर पड़ता है। बवासीर, मधुमेह आदि अनेक रोग हो सकते हैं।

होमियो उपचार :- कई रोगियों को कब्ज से छुटकारा मिल गया, कई रोगियों का उपचार चल रहा है।

रोगी के पिता का कथन :- मेरा पुत्र आयु २ वर्ष जिसको काफी दिनों में मोशन नहीं होता था। ऐलोपैथिक डाक्टर ने रेक्टम पेरालिसि बताया और आपरेशन की सलाह दी थी, परन्तु अपने बालक को डॉ. त्रिवेदी के होमियो क्लीनिक में चिकित्सा करायी मेरा बालक पूर्ण रुपेण स्वस्थ हो गया। मैं डॉ. त्रिवेदी का आभारी हूँ। जिन्होंने मेरे बेटे को नया जीवन प्रदान किया। *(पिन्टू सिंह पिता)*

प्रमुख औषधियाँ :- सल्फर नक्स ब्रायोनिया, एल्यूमिना, ओपियम, हईड्रेस्टिस, चेलिडोनियम एसिडनाईट्रिक, थूजा पल्सटिला आदि औषधियाँ लक्षणों के आधार पर होमियो चिकित्सा की सलाह से ली जा सकती है।

परहेज :- चाय, काफी, धूम्रपान व मादक वस्तुओं से परहेज करना चाहिए। गरिष्ठ बाजारु खाद्यपदार्थों, मद्यपान, नानवेज मसालें वाली चीजों से बचना चाहिए।

सुबह में देर से जगने के प्रमुख दुष्प्रभाव

- सुबह में देर से जगने से शरीर की बायोलॉजिकल क्लॉक प्रभावित होती है, जिससे संपूर्ण शारीरिक क्रियाएं अस्त-व्यस्त हो जाती है।
- जो लोग सुबह में देर से जगते हैं, उनके व्यवहार में बदलाव आ जाता है तथा स्ट्रेस व डिप्रेशन का शिकार होने का रिस्क बढ़ जाता है, जबकि सुबह में जल्दी जगने से तरोताजगी बनी रहती है।
- सुबह में देर से जगने वालों को कैलोरी बर्न नहीं हो पाने के कारण मोटापा बढ़ने लगता है।
- सुबह में देर से जगने वाले पाचन संबंधी विकारों से अकसर परेशान रहते हैं।

महर्षि दयानन्द के विचारों को जन–जन तक पहुंचाने में जुटी है मथुरा की बेटी : डॉ. अर्चना प्रिय आर्य

मथुरा। भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों को बचाने के लिए दिन-रात मेहनतरत महर्षि दयानन्द सरस्वती व आर्य समाज के विचारों से प्रेरित होकर डॉ. अर्चना प्रिय आर्य द्वारा समाज सुधार, नारी जागरण व उत्थान, कन्या भ्रूण हत्या और दहेज प्रथा के साथ युवाओं में तेजी से बढ़ रहे नशाखोरी एवं विलुप्त होते जा रहे संस्कारों को पुनः स्थापित करने के लिए एक अभियान चलाया जा रहा है। आने वाले पीढ़ी को संस्कारवान बनाने में जुटी अर्चना इस बात से चिंतित है कि नई पीढ़ी में भटकाव आ गया है। उनका दावा है कि उनके द्वारा उठाये गये इस कदम से बदलाव अवश्य आयेगा। उनके द्वारा बुलंद आवाज में कही गयी बात व मधुर स्वर में गाये गये गीतों से लोगों तक उनकी बात पहुंचती है। डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने आर्य जगत, समाज सुधार व जन जागरण के क्षेत्र में एक बहुत बड़ा मुकाम हासिल किया है। डॉ. अर्चना बताती है कि लगभग २५ वर्ष पूर्व मेरे पैतृक गांव ऊंचागांव, हाथरस में आर्यसमाज द्वारा एक जलसा किया गया था, जिसमें आर्य विद्वानों से प्रभावित होकर भी उन्होने यह संकल्प किया कि वह भी इस समाज सुधार अभियान को आगे बढ़ायेंगी। इसी संकल्प के साथ वह अपनी छोटी बहिन वंदना प्रिय आर्य के साथ अपनी संस्कृति व संस्कारों से भटक रहे युवाओं को पुनः संस्कारित करने में जुट गई और संस्कार जागृति मिशन की स्थापना कर अपने संकल्प की पूर्ति में लग गयी।

डॉ. अर्चना ने जबसे इस क्षेत्र में कदम रखें है, तब से उन्होने पीछे मुड़कर नहीं देखा। आज देश का कोई कोना ऐसा नहीं जहां तक वह अपने अभियान संस्कार जागृति मिशन की आवाज नहीं पहुंचा सकी हो। पर यहां तक पहुंचने के लिए समाज सुधार के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाने, युवाओं खासकर लड़कियों में इस क्षेत्र में आगे आने के लिए हौसला देने का यह सफर उनके और परिवार के लिए आसान नहीं रहा है। यह सच है कि जब उनके पिता आचार्य सत्यप्रिय आर्य प्रधान अपनी दोनों बेटियों को जन जागरण के इस क्षेत्र में आगे लाये तो गांव व समाज के कुछ तथाकथित लोगों को यह रास नहीं आया। लेकिन पिता ने इसकी परवाह न करते हुए जब अपनी दोनों बेटियों को ऊंची सोच, दृढ़ संकल्प और कड़ी मेहनत के साथ आगे बढ़ाया तो आज वह जिस मुकाम पर है, शायद वह बिनी किसी कठोर तप के पाना असंभव है। अब गांव ही नहीं पूरे देश में जहां भी जाती हैं, वहां की लड़कियों की वह आइकोन बन गई है। जब अपनी बेटियों को समाज सुधार के क्षेत्र में भेजने पर समाज आंख तरेर कर नहीं देखता। यह कोई नहीं कहता कि गांव-गांव घूमती है। समाज व गांव के जो लोग आंखे तरेरा करते थे, आज वही लोग अपनी इस बेटी की उपलब्धि गिनाते फिरते हैं।

ईश्वर दिखाई क्यों नहीं देता ?

संसार में बहुत से ऐसे पदार्थ हैं, जिनका अस्तित्व होने पर भी वे दिखाई नहीं देते। जैसे बिजली हमें दिखाई नहीं देती, परन्तु मशीनों के चलने पर हम उसके अस्तित्व को मानते हैं। इसी प्रकार इस संसार की महान् रचना को देखकर तथा जीवों के अद्भुत शरीरों को देखकर पता चलता है कि इनका रचनाकार कोई अलौकिक है। यह अलौकिक शक्ति ईश्वर ही हो सकती है। इन्हीं सबसे हमें ईश्वर की सत्ता पर विश्वास करना ही पड़ता है। ईश्वर दिखाई भी देता है परन्तु इन बाहरी आँखों से नहीं, हमारे पवित्र अन्तःकरण से उसका अनुभव होता है।

समाचार प्रवाह

शिक्षक दिवस समारोह पूर्वक सम्पन्न

रायपुर। ५ सितम्बर को प्रत्येक वर्ष डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्म दिवस को शिक्षक दिवस के रुप में हर्षो उल्लास के साथ मनाते आ रहे हैं यथावत् प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर के प्राचार्य श्री विनोद सिंह व उप-प्राचार्य श्री पुरुषोत्तम वर्मा एवं समस्त शिक्षक/शिक्षिकाओं एवं सभी स्टॉफ का शिक्षक दिवस के अवसर पर विद्यालय प्रबंध संचालन समिति एवं छात्र/छात्राओं के द्वारा सम्मान किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के आसंदी पर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य जी रहे। बिशिष्ट अतिथि के रुप में पं. कांशीनाथ चतुर्वेदी सभा उपप्रधान, कार्यालय मंत्री आचार्य बलदेव राही, डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी (समिति कोषाध्यक्ष), लोकनाथ आर्य (प्रबंधक), लक्ष्मण प्रसाद वर्मा शामिल हुए। शिक्षक दिवस के अवसर पर विद्यालय के छात्र/छात्राओं के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। सभा प्रधान जी द्वारा आदर्श शिक्षक का विद्यालय को आगे बढ़ाने में क्या भूमिका है ? इस बारे में बहुत सुन्दर उद्बोधन किया गया तथा इस विषय में ज्ञानवर्धक बाते बताये साथ ही विद्यार्थियों को विद्यार्थी जीवन के महत्व के बारे में समझाते हुए उन्हें आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किए एवं आशीर्वाद दिये।

संवाददाता : प्राचार्य, म.द.आ.उ.मा.विद्या. टाटीबन्ध

राष्ट्र कल्याण महायज्ञ, भजन संध्या, कवि एवं योग सम्मेलन धूमधाम से सम्पन्न

मनुष्य की चेतना को जगाना सबसे बड़ा रचनात्मक कार्य है - आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री

नई दिल्ली। अध्यात्म पथ (पंजी.) मासिक पत्रिका द्वारा देश धर्म पर बलिदान देने वाले वीरों की याद में राष्ट्र कल्याण महायज्ञ, भजन संध्या एवं सम्मान समारोह का भव्य आयोजन आर्यसमाज पश्चिम विहार में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री भारतभूषण साहनी ने की तथा मुख्य अतिथि वेस्ट जोन के चेयरमेन श्री कैलाश सांकला थे। समारोह का आयोजन वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री के सान्निध्य में हुआ।

इस अवसर पर पर अध्यात्म पथ पत्रिका का लोकार्पण खचाखच भरे सभागार में गणमान्य लोगों की उपस्थिति में हुआ। अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने वीर शहीदों के अभूतपूर्व त्याग बलिदान को याद किया तथा उनके जीवन से देशभक्ति की भावना के अनुकरण एवं अध्यात्म पथ पर चलने की प्रेरणा दी तथा उन्होंने कहा कि मनुष्य की चेतना को जगाना सबसे बड़ा रचनात्मक कार्य है। भजन सम्राट श्री नरेन्द्र आर्य सुमन के भजनों एवं श्री विनय शुक्ल विनम्र की कविताओं ने सबका मन मोह लिया।

इस समारोह में आर्यजगत् के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी धर्ममुनि जी को अध्यात्म मार्तण्ड सम्मान से विभूषित करते हुए प्रशस्ति पत्र, सम्मान राशि एवं शाल भेंट की। अध्यात्म रत्न से सम्मान से सर्वश्री देशराज सेठी, विनोद कुमार शर्मा, प्रि. शालिनी अरोर को सम्मानित किया गया, तो विद्यासागर नागिया स्मृति सम्मान से डॉ. हरीश मटई को। अतिथि सम्पादक श्री सुरिन्द्र चौधरी एवं प्रबंध सम्पादकश्री अश्विनी नागिया ने सभी अभ्यागतों का हार्दिक धन्यवाद किया। अन्त में अनेक शिष्यों के जीवन निर्माता स्वामी धर्ममुनि जी ने कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुअ अपना आशीर्वाद प्रदान किया। भव्य ऋषिलंगर के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

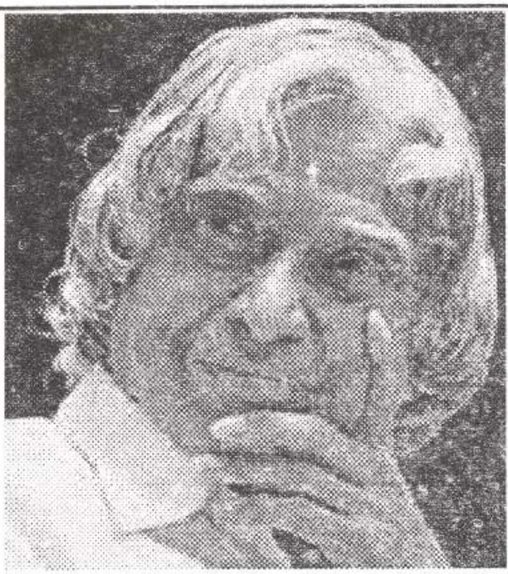

१५ अक्टूबर
ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जयंती एवं विश्व छात्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाऐं

दीपमालिका की शुभकामना

दुखदारिद्र्यरोग प्रवृद्धं तमो,
नैव दृश्येत भूमौ कुहापि प्रभो ।
सन्तुसर्वत्र सर्वे सदानन्दिताः,
राजतां दीपमालेयमालोकिनी।।

भावार्थ :- इस दीपोत्सव के पावन अवसर पर हे प्रभो ! ऐसी कृपा करना कि इस भूमण्डल पर दुख दरिद्रता व रोग रुप अंधकार कहीं पर भी न दिखाई दे। सर्वत्र सभी प्राणी सर्वदा आनन्दित रहें। अन्धकार को विदीर्ण कर देनेवाली यह दीपमाला जनमानस को उत्प्रेरित करती हुई देदीप्यमान रहे।

शुभाकांक्षी
अग्निदूत परिवार

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा **इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515, आई.एफ.एस.सी. SBIN0009075 कोड नं. अथवा देना बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. 107810002857 आई.एफ.एस.सी. BKDN0821078 है,** जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक/देना बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. 0788-4030972 द्वारा सूचित करते हुए या अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं। अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. 9770368613 में सम्पर्क कर सकते हैं।

– **दीनानाथ वर्मा,** मंत्री मो. 9826363578

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001, फोन : 0788-4030972

महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय, टाटीबन्ध रायपुर में सम्पन्न शिक्षक दिवस समारोह की चित्रमय झलकियाँ

महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाण दिवस

एवं **दीपावली पर्व** की समस्त प्रदेशवासियों एवं "अग्निदूत" पत्रिका के समस्त सुधी पाठकों को छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं "अग्निदूत" परिवार की ओर से

हार्दिक शुभकामनाऐं एवं बधाईयाँ

CHH-HIN/2006/17407 अक्टूबर 2019 डाक पंजी. छ.ग./दुर्ग संभाग/99/2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लायसेंस नं. : TECH/170/CORR/CH-4/2017-18-19

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।
प्रेषक : "अग्निदूत", हिन्दी मासिक पत्रिका, कार्यालय-छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.) ४९१००१